CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

।।ॐ नमो विष्णुस्वामिने।।

॥ वैष्णववैभवमहाकाव्यम् ॥

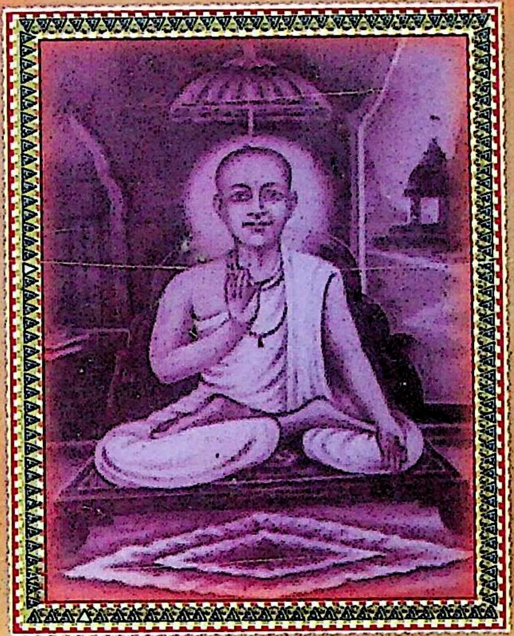

ालय
राणसी-५

आद्याचार्य जगद्गुरु विष्णुस्वामी महाराज

सतुआबाबा आश्रम, मणिकर्णिकाघाट, काशी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[illegible] की [illegible]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ श्रीः ॥

मान्याः,

श्रीसन्त श्री बाबा आश्रमे,
[illegible] मणिकर्णिका, वाराणसी

एतत्प्रचाते इदमुपायनी
क्रियते भवतीभ्यः

मनुदेवभट्टाचार्यः
24/3/05

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ॐ

।। श्रीगणेशाय नमः।।

।। ॐ नमो भगवते विष्णुस्वामिने नमः।।

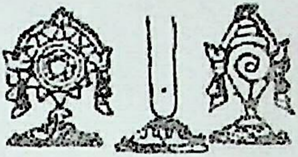

वैष्णववैभवम् महाकाव्यम्

[श्रीश्रीविष्णुस्वामिजगद्गुरुश्रीयमुनाचार्य-
महोदयानामाज्ञया विरचितम्]

प्रणेता सम्पादकश्च

मनुदेवभट्टाचार्यः

उपाचार्यः, व्याकरणविभागः

सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयः, वाराणसी

वाराणसी

वि.सं. २०५९

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रकाशक —
महामण्डलेश्वर श्री १०८ ओङ्कारदासशास्त्री 'ब्रह्मचारी'
श्रीसतुआबाबा आश्रम,
सी.के. १०/४८ मणिकर्णिकाघाट,
वाराणसी।

❐

प्रथम संस्करण - १००० प्रतियाँ
गुरुपूर्णिमा २०५९ वि०सं०
© सर्वेऽधिकाराः प्रकाशकाधीनाः
सहयोग राशि - ८१.०० रूपये

❐

प्राप्तिस्थान —
श्रीसतुआबाबा आश्रम,
सी.के. १०/४८ मणिकर्णिकाघाट, वाराणसी
फोन : ०५४२-३९२४८२, ३३९२५३
श्रीकाशीविश्वनाथ सतुआबाबा ट्रस्ट
पालिताणा, जिला-भावनगर, गुजरात
फोन : ०२८४८-५२१२८

❐

मुद्रक —
श्रीजी कम्प्यूटर प्रिण्टर्स
जे. १२/५, नाटी इमली
वाराणसी-२२१००१।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

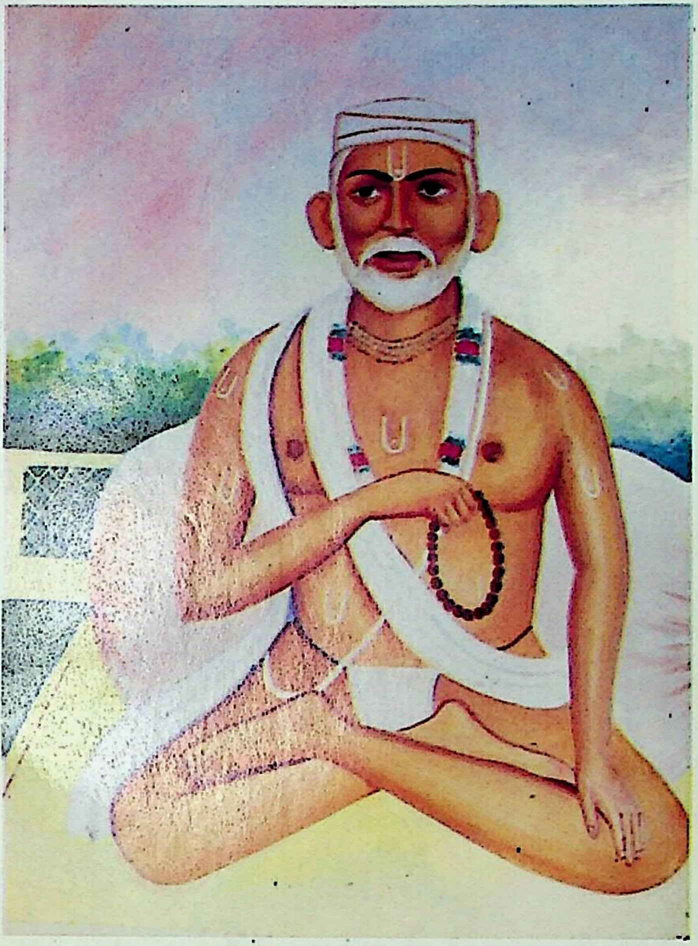

श्रीश्री १००८ श्रीरणछोड़दास जी महाराज
सतुआबाबा (प्रथम)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

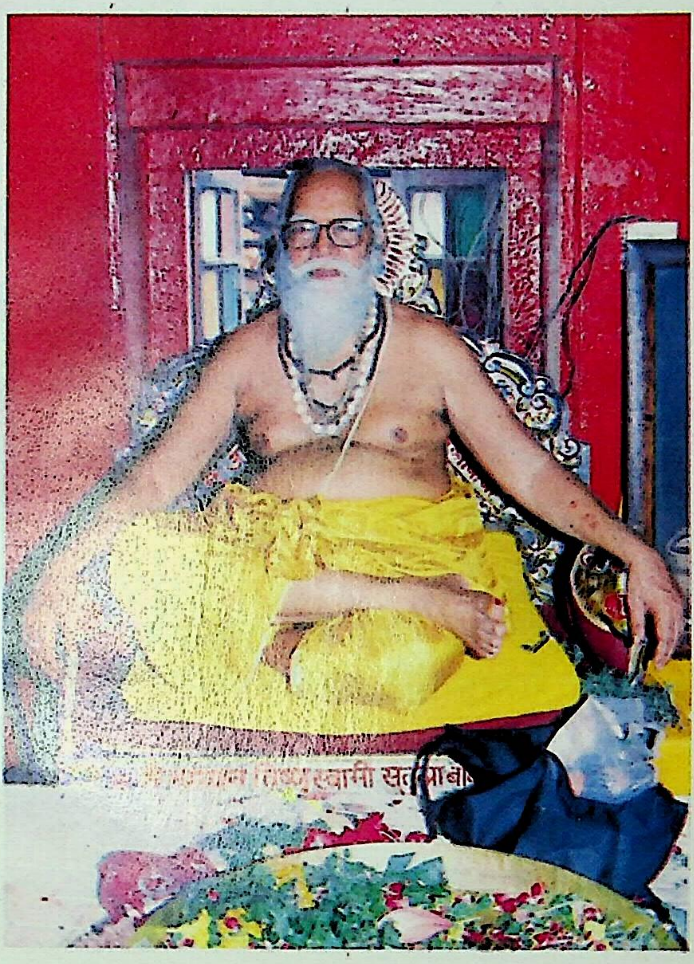

अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु
विष्णुस्वामी यमुनाचार्य जी महाराज।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

समर्पणम्

शास्त्राभ्यासप्रयतधिषणाब्रह्मसूत्रप्रणेतृ-
श्रीमद्व्यासाननसरसिजप्राप्तसत्तत्त्वशीधुः।
शुद्धाद्वैताभिधमतसुधाप्लाविताशाङ्गनाश्रीः
विष्णुस्वामी भुवि विजयते योगभाभासिताङ्गः॥

जगद्वन्द्य प्रातःस्मरणीय पूज्यपाद
आद्याचार्य जगद्गुरु श्रीविष्णुस्वामी
के
श्रीचरणकमलों में सादर समर्पित-

— जगद्गुरुविष्णुस्वामी यमुनाचार्य
गुरुपूर्णिमा, २०५९

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नान्दीवाक्

माङ्गल्यमेदुरं सौशब्द्यमण्डितञ्च परिशील्य वैष्णववैभवाख्यं प्रत्यग्रमहाकाव्यं कविरत्नश्रीमनुदेवभट्टाचार्योपज्ञं निरर्गलाऽनन्द-सम्भारकरम्बितमिव जायते काव्यशिल्पकातरं मन्मानसम्। विविधविषयीणि, किञ्चाऽसंस्तुतेऽतिवृत्तपल्लवितानि शतमितानि पृथुलकलेवराणि सुतनूनि वा महाकाव्यानि दृग्विषयीकुर्वतां सदृहयानां विश्वासस्सम्प्रति द्रढिम्नः परां काष्ठामधिरूढस्तिष्ठति यत्पुराण्यपि संस्कृतभारती युवतिरेव। नित्ययौवनं तस्याः सिद्धमेव निरन्तरालाभिरर्वाचीनरचनाभिः। अद्यतनेष्वपि संस्कृतमहाकाव्येषु सन्दृश्यते सैव व्यङ्ग्यार्थचमत्कृतिर्महाकवेः कालिदासस्य, तदेवार्थगौरवं भारवेः, तदेव शब्दानुशासनवैचक्षण्यं घण्टामाघस्य, तदेव च शब्दार्थलालित्यं कविपण्डितश्रीहर्षस्य!

श्रीमनुदेवभट्टाचार्याणां सर्वतोभद्रं विलक्षणं कवित्वं चिरकालात् परिचिनोमि, प्रत्यभिजानामि, समाद्रिये च। काव्यपाका अनेके मञ्जुलपदशय्यावति कवित्वे सरलतया शक्यन्ते नयनविषयीकर्तुम्। नृत्यतीव भावाभिव्यक्तिरेषां वशवर्तिनी। प्रौढिश्चात्मानं सार्थयति पदबन्धेषु कृतास्पदा। यथाऽहं पश्याम्यनुभवामि च एवंगुणविशिष्टा मुष्टिमिता एव सन्ति सत्कवयो राष्ट्रे, येषां सतताराधनोपस्नुता भगवती मल्लिकाक्षवाहिनी तेष्वतितरां स्निह्यति। किञ्च, भट्टाचार्यो मनुदेवस्तेष्वन्यतमः। सोऽप्यत्रैव राराज्यतेऽधिसम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयमिति कुलपतिपदाभि-मानिनो ममापि कृते परमसन्तोषाऽनुरागहेतुः।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नाऽत्रावसरस्तदुपज्ञस्य महाकाव्यस्य प्रतिपाद्यादिसमीक्षायाः। तत्सर्वं पाठकाधीनम्। अत्राऽहं केवलमनुशीलयितृपक्षतो जयजीवतामुपस्थाप्य कवेस्तत्प्रणीतमहाकाव्यस्य चाभिनन्दनं विदधे! मन्ये, वैष्णववैभवाख्यमिदमभिनवं सारस्वतोपायनं काश्याः संस्कृताराधनं पोषिष्यति, स्थेमानं गरिमाणञ्च संस्कृतकवितायाः प्रकटयिष्यति।

कुलपतिनिवासः
२०.७.२००२ ई०

सप्रणयम्, सहृदयवशंवदः
मिश्रोऽभिराजराजेन्द्रः
कुलपतिः
सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शुभाशंसा

वैष्णववैभवम् महाकाव्य का वैशिष्ट्य

'लङ्कापतेः संकुचित्तं यशो यद् यत्कीर्त्तिपात्रं रघुराजपुत्रः।
स सर्व एवादिकवेः प्रभावो न कोपनीयाः कवयः क्षितीन्द्रैः।।'

(महाकवि विल्हण)

'विक्रमांकचरितम्' में उल्लिखित उपर्युक्त श्लोक से स्पष्ट है कि एक प्रतिभावान् कवि में यह सामर्थ्य है कि वह चाहे तो एक मानव को देव या देव को दानव बना सकता है। कवि, निर्भीक और भावुक होता है, बस, उसकी एक ही हार्दिक अभिलाषा और ईश्वर से प्रार्थना होती है कि उनको अपनी रचना, हृदयशून्य लोगों के सामने प्रस्तुत करने का अवसर कभी न मिले। कहा भी गया है—**'अरसिकेषु कवित्वनिवेदनं शिरसि मा लिख मा लिख मा लिख'**।

बात बिल्कुल स्पष्ट है कि सरस-सरल सहृदय व्यक्ति ही, कवि की आन्तरिक अभिव्यक्ति का मूल्यांकन कर सकता है, क्योंकि 'विद्वानेव विजानाति विद्वज्जनपरिश्रमम्'। साधु काव्य के सेवन से अल्पज्ञ, अल्पप्राण व्यक्ति को भी बड़े सहज ढंग से पुरुषार्थ चतुष्टय (धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष) की प्राप्ति हो जाती है। यही कारण है कि अलंकारशास्त्र के आचार्य विश्वनाथ ने अपने 'साहित्यदर्पण' में स्पष्ट घोषणा की है—

'धर्मार्थकाममोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च।
करोति कीर्तिं प्रीतिं च साधुकाव्यनिषेवणम्।।'

कः क इह वैष्णव-वैभवे न रमते!

पूज्यपाद महामहोपाध्याय स्वनामधन्य डॉ॰ गोपीनाथ कविराज के कृपापात्र, कविवर ऋषिकल्प स्व॰ पं॰ पशुपति भट्टाचार्य के कनिष्ठ पुत्र, पुराण-शास्त्र के मर्मज्ञ डॉ॰ रामशंकर भट्टाचार्य के अनुज, आशुकवि श्रीमनुदेवभट्टाचार्य माँ सरस्वती के वरदपुत्र हैं। लेखनी और वाणी पर आपको जन्मजात अधिकार प्राप्त है। मेरे कथन की सत्यता को आप स्वयं प्रस्तुत महाकाव्य 'वैष्णव-वैभवम्' में दृष्टिगोचर करेंगे। सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के व्याकरण विभाग में उपाचार्य के रूप में शुष्क

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

व्याकरण की फक्किकाओं को पढ़ाने वाला व्यक्ति, पदलालित्य और अर्थगौरवमयी पद्य-गद्य रचना में भी सिद्धहस्त है, विश्वास नहीं होता था, परन्तु 'वैष्णव-वैभवम् महाकाव्य' का अनुशीलन, परिशीलन करने पर प्रीति और प्रतीति दोनों हो गयी हैं।

प्रस्तुत महाकाव्य में नौ सर्ग हैं, जिनमें कुल श्लोक संख्या ४५९ हैं। प्रमुख रूप में आपने वसन्ततिलका, मालिनी, अनुष्टुप्, शिखरिणी, शार्दूलविक्रीडित, मन्दाक्रान्ता, स्रग्धरा, उपजाति छन्दों का सफल प्रयोग किया है। भक्तिरस, शान्तरस की इस ग्रन्थ में सर्वत्र बांकी झांकी दिखाई देती है। शब्दशक्तियाँ (अभिधा, लक्षणा, व्यञ्जना) भी अपने स्वाभाविक रूप में दिखाई पड़ती है। यह सत्य है कि पुण्यात्मा लोग ही वैष्णवी-विभूतियों के कार्य कलापों का रसास्वादन कर सकते हैं, साधारण जन नहीं, कहा भी गया है—
"पुण्यवन्तः प्रमिण्वन्ति योगिवद्रससन्ततिम्।"

प्रस्तुत महाकाव्य के प्रशान्तधीरोदात्त नायक भगवान् विष्णुस्वामी के चरणों में कोटिशः वन्दन करता हुआ, आदि सतुआबाबा की सात्त्विक परम्परा का अभिनन्दन करता हूँ। विष्णुस्वामी सम्प्रदाय के जगद्गुरु, षष्ठपीठाधीश्वर, महामण्डलेश्वर १००८ श्री यमुनाचार्य महाराज का आभारी हूँ। जिन्होंने इस महान कार्य को सम्पन्न करने की सम्पूर्ण व्यवस्था की है। महाराज के कृपापात्र महामण्डलेश्वर श्रीओंकारदास महाराज का कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने प्रकाशक पद का निर्वाह किया है। रचनाकार महाकवि श्रीमनुदेवभट्टाचार्य के भविष्य की शुभकामनाएँ करता हूँ, और उन्हें साधुवाद देता हूँ।

यह 'वैष्णव-वैभवम् महाकाव्यम्' जनता जनार्दन के हृदय का कण्ठाभरण बने—ऐसी पराम्बा जगदम्बा तथा औघड़ दानी भोले बाबा से मेरी प्रार्थना है।

इति शुभम्

रामरङ्ग शर्मा

आषाढ़ शुक्ल एकादशी

वि॰सं॰ २०५९

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥श्रीः॥

॥श्रीवृन्दावनविहारिणे गोकुलेन्द्राय नमः॥

किञ्चिद् निवेदनम्

अथेह असन्देहममन्दमानन्दकन्दसन्दोहमद्य समनुबोभवीमि विदुषां पुरोऽस्मदत्यन्तकृपाभाजा मनुदेवभट्टाचार्येण विरचितं नूतनं वैष्णववैभवाख्यं महाकाव्यमिदमुपस्थाप्य। श्रीमान् मनुदेव-भट्टाचार्योऽस्माकं नितान्तं स्नेहपात्रं श्रद्धाभक्तिसमन्वितो विनीतो मृदुभाषी गुरुभक्तिमान् कविवरो मदाज्ञयैव अल्पीयसि अनेहसि एव श्रीश्रीमद्भगवद्विष्णुस्वामिचरितामृतात्मकं महाकाव्यमिदं प्रणीय श्रीश्रीमज्जगद्गुरुविष्णुस्वामिसम्प्रदायस्य सतुआबाबाश्रमस्य च नितरामाशीर्वादवाग्भागिति यत् किञ्चिदेतत्।

अस्मदाज्ञापरतन्त्रेण आयुष्मता श्रीमनुदेवभट्टाचार्येण अस्मत्प्रदत्त-साहित्यजातमधीत्य नवसर्गात्मकं नवीनमिदं महाकाव्यं सद्यस्तरां व्यरचीति परममोदास्पदं पदं समेषां वैष्णवानाम्, सहृदयानाम्, साहित्यिकानामन्येषाञ्च विदुषामिति प्रत्यक्षमेव।

एतस्मात् पूर्वमपि च्छात्रावस्थायामेवानेन श्रीमन्महामहोपाध्यायगोपीनाथकविराजमहाशयानां चरणपद्मेषूपविश्य तत्कृपयैव तदीयगुरुवरयोगिराजाधिराजश्रीविशुद्धानन्दपरमहंसश्रीचरणेतिवृत्त-साधनात्मकं द्वादशसर्गं महाकाव्यमरचि, मध्ये तावद् छिन्नवृत्तिकोऽयं महान्तं कालमनैषीत्, यदा यत्र तत्र स्थायं स्थायं यस्य कस्यापि गृहे भोजं भोजं प्रतिभासमन्वितोऽपि लेखनाद् विरराम। पण्डितराज-श्रीराजेश्वरशास्त्रिमहोदयेभ्यः प्राचीनभारतीयं विमानशास्त्रमयमधीतवान्, तत्र राइटभ्रातृभ्योऽष्टभ्यो वर्षेभ्यः पूर्वमेव मुम्बय्यां चौपाटीक्षेत्रे महाराजगायकवाडप्रभृतिमहापुरुषसन्निधौ श्रीशिवकर-बापूजीतलपदेमहोदयेन विमान आविष्कृतो मरुत्सखाभिधानः सार्धैक-सहस्रफीटपरिमितं व्योम्नि उड्डिड्ये, अमेरिकास्थनासाकेन्द्रीय वैज्ञानिकान्यतमपृष्टेन कोलकातास्थेन अजितदत्तेन श्रीश्रीमत्कविराज-महोदयसन्निधौ प्रेषितपत्रस्योत्तररूपं सर्वं व्याहृत्यापि निर्वृत्तिकोऽयं न किञ्चित् कर्तुं शशाकेति कृत्स्नस्य शिक्षाजगतो पारेगिरां दौर्भाग्यम्। अस्तु—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अदसीयं प्रतिभातिशयं रचनाचातुरीं प्रवृत्तिं च ज्ञायं ज्ञायमहमेनमाहूय श्रीमद्भगवद्विष्णुस्वामिवर्णनव्याजेन स्वरसनां पावयितुमादिश्य निश्चिन्तोऽभवम्, ततो द्वित्रमासाभ्यन्तरे एवायं वैष्णववैभवाख्यं महाकाव्यमिदं कवयित्वा मत्पुरः स्थापितवानिति इदमीयां श्रद्धां दर्शं दर्शं नितरां प्रफुल्लचेता अमुष्मै पारेसङ्ख्यं कृपाराशिं वितरामि।

भगवान् प्रियापरिश्लिष्टो गोकुलेन्द्रः, अन्नपूर्णान्वितो विश्वनाथः, नारद-व्यास-शुक-विष्णुस्वामि-रणछोड़दासप्रभृतयः शुद्धाद्वैतमतोपज्ञातार आचार्याः सर्वेऽपि कणेहत्य इदमीयां सर्वातिशयिनीं लौकिकीमुन्नति-माध्यात्मिकीमनुभूतिञ्च सर्वदा वर्धयेयुरिति क्रियासमभिहारेण भागीरथीम्, मणिकर्णिकाम्, स्वसम्प्रदायाचार्यांश्च प्रणत्य प्रार्थये।

एतन्महाकाव्ये शुभाशंसनं व्याहर्तारो मान्याः सम्पूर्णानन्द-संस्कृतविश्वविद्यालय कुलपतयो महाकवयो डॉ० राजेन्द्रमिश्रमहोदयाः, पण्डितवर्याः श्रीरामरङ्गशर्माणश्च नितरां साधुवादास्पदम्, अहं तेषां सदैव कृतज्ञः।

यथैव महाकाव्यमिदं कविवरेण श्रीभट्टाचार्येण रचितमल्पीयसि काल एव, तथैव श्रीजीकम्प्यूटर्सस्वामिना श्रीअनूपनागरेणाऽपि झटित्येव प्रकाशनमस्य विधाय सततं धन्यवादास्पदं गत इति अहं तेषामपि कृतज्ञः।

महाकाव्यस्यास्य प्रणेता एव सम्पादक इत्यपि निवेदनम्। एवमेव अस्माकं सतुआ-बाबा-संस्कृत-महाविद्यालयस्य प्राचार्याः श्रीअरविन्दशास्त्रिणोऽन्ये चाध्यापकाः मठस्याधिकारिणो महामण्डलेश्वराः श्रीओङ्कारदासाः, वकीलसाहबप्रभृतयोऽन्ये च सर्वेऽपि असकृद् धन्यवादास्पदम्।

अन्ते स्वसम्प्रदायाचार्यान् मुहुराप्रणम्य सर्वेषां कृते कृपाराशिमहर्निशं याचं याचं श्रीकाशिविश्वनाथचरणारविन्देषु महाकाव्यपुष्पस्तबकममुं भक्तिनम्रेण चेतसा निवेद्य विरमामीति शम् —

जगद्गुरुविष्णुस्वामी

गुरुपूर्णिमा, २०५९ यमुनाचार्यः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ श्री रामकृष्णाभ्याम् नमः॥

जगद्गुरु विष्णु स्वामी भगवान् की जय

अर्धकुम्भपर्व, इलाहाबाद दिनांक ०८.०२.९५ समय ९.१५ प्रातः श्रीसतुआबाबाशिविर में सर्वप्रथम संतो-भक्तों श्रद्धालुओं के मध्य शतचण्डी यज्ञ का प्रारम्भ दीपप्रज्वलन के साथ हुआ। इसके बाद विशेषप्रतीक्षारत कार्य का शुभारम्भ हुआ।

चतुः सम्प्रदाय-षड्दर्शन संत, सदियों से प्रतीक्षारत थे कि विष्णुस्वामी जगद्गुरुपीठ तथा आचार्य की नियुक्ति के विषय पर चर्चा और निर्णय हो जिसे गंगा माँ ने अपनी गोद में आज पूरा किया। कार्यक्रम के अन्तराल में श्रीसतुआबाबाआश्रममर्णिकर्णिकाघाट को पीठरूप में स्थापित किया गया और निर्णय लिया गया कि आचार्यत्व का प्रतिनिधित्व, प्रचार, प्रसार, खोज, प्रकाशन आदि समस्त कार्य श्रीजमुनादास महाराज अपने आचार्य की गरिमा के अनुकूल करते हुए भावी मार्ग प्रशस्त करें।

श्री महन्त रामलखन दास

चार सम्प्रदाय

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥श्रीः॥

सम्पादकीयम्

शाक्ताण्डावधिकीर्तिकुन्दकलिकागोपाङ्गनालिङ्गितं
भूयश्श्रीसुमनोमनोज्ञसुमनोमालावलीलालितम्।
सत्तत्त्वाम्बुधिवृन्दमन्थनमहाकूर्मैकलीलास्पदं
गोपीनाथमहो महोविलसितं सन्तोष्टवीम्यादरात्॥

अथेह नम्रीभूय भूय एव भूयस्समनस्कारनमस्कारराजीवराजीवलयितान् सुमनस्सुमनस्सुमनस्सुमनोमनोज्ञमणिमालामल्लिकामतल्लिकाऽऽलिलालित्यललामलीलालालितपदो गुरुचरणान्नामं नामं प्रस्तूयते देध्मीयमानाऽसङ्ख्यसङ्ख्यावत्सङ्ख्यशङ्खध्वनिधुरन्धराणां सहृदयानां पुरतः श्रीश्रीमत्काशीमणिकर्णिकास्थसतुआबाबामहाश्रममहामण्डलेश्वरयतीश्वरजगद्गुरुश्रीश्रीयमुनाचार्यश्रीचरणानामाज्ञया विरचितं वैष्णववैभवं नामाभिनवं महाकाव्यम्।

मदुपरि निरतिशयकृपापीयूषयूषाऽऽसारसारवार्षुकाः श्रीमन्तो सतुआबाबापीठाधीश्वरा आचार्यश्रीचरणाः अनन्तश्रीविभूषिता जगद्गुरवो यमुनाऽऽचार्यमहोदयाः मदीयानल्पशुभोदर्कवशादकस्मादेवैकदा मामाहूय श्रीश्रीमज्जगद्गुरुविष्णुस्वामिश्रीचरणसम्प्रदायवर्णनात्मकं महाकाव्यं प्रणेतुं समादिश्योपकृतवन्त इति तदीयपादपद्मपरागपुञ्जेषूपहृत्यासकृत् प्रणामाञ्जलिमात्मानं कृतार्थयामि।

इतः पूर्वमपि व्याकरणाचार्यच्छात्रेण सता मयकाऽष्टाषष्ट्युत्तरैकविंशे ख्रीष्टहायने प्रत्यूषस्तमांसास्मर्यमाणपादपद्मपरागरागाणां महामहोपाध्यायप्रभृत्यनल्पविरुदावलीमन्दारमालालालितानां सकलदिग्विदिक्सीमन्तिनीसीमन्तधम्मिल्लतल्लजसम्पम्फुल्यमानमल्लीमतल्ली-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

मोमुद्यमानमानसमधुव्रतव्रातकीर्तितकीर्तिकान्तीनां श्रीश्रीमद्गोपीनाथ-कविराजश्रीचरणानामाज्ञया तदीयगुरुदेवयोगिराजाधिराजश्रीविशुद्धानन्दपरमहंसदेवजीवनसाधनाध्वनिधन्यं विशुद्धवैभवाख्यं महाकाव्यं प्राणायि, तच्च सद्यस्तरां संस्कृतविश्वविद्यालयेन प्राकाशि। प्रायो महाकाव्यानि नायकनायिकाशृङ्गारभूयिष्ठानि बोभुवतीत्येव सार्वजनीनम्, परमिदन्तु विवेकानन्दचरित-ज्ञानानन्दचरितादिवत् सन्तचरित्रात्मकं महाकाव्यमिति बुधैर्बुधेलिमम्।

काव्यं कीदृगित्यत्र तु सहृदयाः प्रमाणम्। अहं तु श्रीमन्महामण्डलेश्वरजगद्गुरुसतुआबाबापीठाधीश्वराणामाज्ञां पालितवानित्येतावतैव सन्तोतुष्य इति दिक्।

श्रीमन्तः कुलपतिमहोदयाः, श्रीमन्तो रामरङ्गशर्ममहोदयाश्च स्वाशीर्वादैमामधमर्णीकृतवन्त इति तेभ्यः समेभ्योऽसमेभ्यः क्रियासमभिहारं नमोहारं समर्पयामि।

मध्ये त्रिंशद्वर्षाणि यावन्निर्वृत्तिकेन मयाऽधिकाश्येव भ्रामं भ्रामं यत्र कुत्रापि भोजं भोज न काऽपि सारस्वती सेवा कर्तुमपार्यतेति तदर्थमात्मानमेवासकृद् धकिद् चरिकरीमि।

मां संस्कृतमेव पाठयित्वाऽऽजीवनं दुःखततीः सहित्वा हित्वा च सकलभौतिकसुखान्यपि मदुपरि परितः कृपाभाजौ मातापितरौ श्रीवीणापाणिदेवी-पशुपतिभट्टाचार्यौ, भूयस्तरां तौ प्रणत्यैव कथञ्चिदात्मानं धारयामीत्यलं शोकोच्छ्वासेन। श्रीकाशीविशालाक्षीविश्वनाथदण्डपाणिढुण्ढिराजप्रभृतिदेवताः, गुरुवर्यान् श्रीकविराजचरणान् महामण्डलेश्वरश्रीयमुनाचार्यांश्चासकृत् प्रणत्य, श्रीजीप्रिण्टर्ससञ्चालकाय अनूपमहोदयाय, महामण्डलेश्वरौङ्कारदासमहोद्रयेभ्यः, श्रीमतोऽरविन्दशास्त्रिभ्यः, वकीलमहोदयेभ्योऽन्येभ्यश्च भूयः साधुवादान् वितीर्य, सर्वेषां कृपैककामो विरमति—

महाकवीनां चरणधूलिः

मनुदेवमहाचार्यः,

सम्पादकः

गौरवी पौर्णमासी
२०५९, चन्द्रपुत्रवारः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

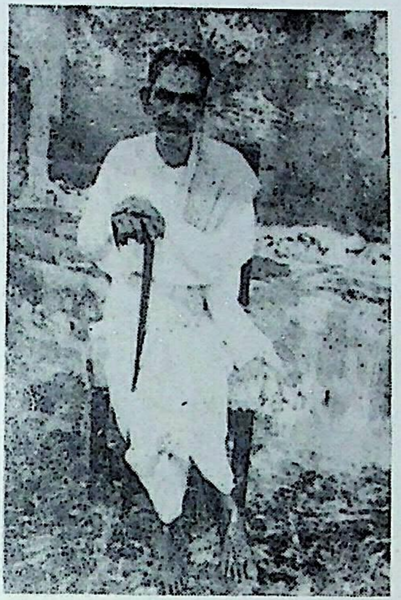

॥ महाकाव्यं रचयितुर्मनुदेवभट्टाचार्यस्य पितृचरणा
व्यासकूटाविष्कर्तारः साहित्यसागराः
महापण्डितश्रीपशुपतिभट्टाचार्यमहानुभावश्रीचरणाः॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीकाशीविश्वनाथमन्दिरं काशीस्थ श्रीस्तुआबाबा आश्रम, पालीताणा (गुजरात)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शुद्धिपत्रम्

[शुद्धिपत्रमदस्साहित्यमीमांसाचार्यैस्सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयीयमीमांसाविभागाध्यक्षैः डॉ. श्रीकमलाकान्तत्रिपाठिमहोदयैर्निरमायि-सम्पादकः]

	अशुद्धम्	शुद्धम्
पितृचरणचित्रपृष्ठे	साहित्यसागराः	साहित्यसागरा
गुजर्रस्थाश्रमचित्रे	स्तुआ	सतुआ

प्रथमः सर्गः

श्लोकः	पादः	अशुद्धम्	शुद्धम्
५	२	ऽऽधारया	धारया
३७	२	भंग	भङ्ग
३७	३	गोपांगना	गोपाङ्गना
३८	४	वत्क्रः	वक्त्रः
४४	२	प्यतिनतिहृदयास्ते सर्व एवं ननर्तुः	प्यथ किल ननृतुस्ते सर्व एव प्रकामम्
४५	३	नोदंमानः	नुद्यमानः।

द्वितीयः सर्गः

श्लोकः	पादः	अशुद्धम्	शुद्धम्
८	१	हृदयाग्भोजं	हृदयाम्भोजं
९	१	पदाम्भो	पदाम्भोज
९	३	तद्दातुं	तद् दातुं
१३	२	सप्तर्षन्य	सप्तर्ष्यन्य
४५	२	परागरागे	परागरागात्।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तृतीयः सर्गः

८	२	धर्मपथितः	धर्मपथतः
१४	३	दिसमस्त	दितसमस्त
२८	२	मधुस्य	मधुपस्य
४६	२	निपरीय	निपीय
५०	१	भूः	भू

चतुर्थः सर्गः

३	२	संसारा	संसार
१७	४	राजोचारै	राजोपचारै

पञ्चमः सर्गः

२	३	ऽकल्प्य	ऽप्यल्प्य
३७	३	विग्विजय	दिग्विजय

षष्ठः सर्गः

२७	१	पदाब्ध	पदाब्ज
२७	२	भ्रमरायण्माणः	भ्रमरायमाणः
२७	४	दीव्यद्युति	दीव्यद्द्युति
४६	१	दिश्याममुष्या	तद्दिश्यमुष्या

सप्तमः सर्गः

३०	१	महातस्या	महातपस्या

अष्टमः सर्गः

३७	४	समेपाम्	समेषाम्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥श्रीः॥

श्रीमद्वैष्णववैभवमहाकाव्यस्य

विषयानुक्रमणी

प्रथमः सर्गः

मङ्गलाचरणम्, नादपरम्परा, विन्दुपरम्परा, दायतः सम्प्रदायस्य वरीयस्त्वम्, भक्तिस्वरूपम्, वैष्णवभक्तिः, गोलोकस्वरूपम्, तत्र शिवेन गोकुलेश्वरतः सगुणभक्तिप्रचारात्मकसम्प्रदाय-प्रर्वतनारूपवरप्राप्तिः, ततः भगवतः शिवस्य आनन्दोल्लासः, भगवतः शिवतो नारदेन तन्मन्त्रप्राप्तिः, ततः सम्प्रदायप्रवर्तनम्, ततो विष्णुस्वामिसम्प्रदायप्रारम्भः, सर्गसमाप्तिः १-११

द्वितीयः सर्गः

कैलासे शिवगणानामानन्दोद्रेकः, नारदकर्तृकः सम्प्रदाय-विस्तारविचारः, द्वापरसन्ध्यंशकाले शान्तनुशासने व्यासावतारः, वासवीप्रसङ्गः, व्यासोत्पत्तिः, नारदाद् वेदव्यासेन मन्त्रलाभः, ततः शुकेन तल्लाभः, शुकाच्च विष्णुस्वामिना तल्लाभः, कलिकालवर्णनम्, कलिशान्त्यै शुद्धभक्तिसनाथसगुणो-पासनात्मक उपायः, सर्गसमाप्तिः १२-१८

तृतीयः सर्गः

सम्राड्युधिष्ठिरराज्यवर्णनम्, तदा द्रविडदेशे कस्यचिद्राज्ञो नारायणभट्टो नाम मन्त्री, तत्पुत्रो माधवभट्टः, स एव विष्णु-स्वामी, माधवभट्टपितुर्देहावसानम्, माता सती जाता, माधवस्य विद्याप्राप्त्यै वाराणसीप्रस्थानम्, मार्गे सदाशिवाच्छास्त्रलाभः,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गुरुदक्षिणायै गुरुणा व्यासमुखाद् ब्रह्मसूत्रार्थशुश्रूषाकथनम्, माधवकृतोद्योगेन तत्पूर्तिः, व्यासवर्णनम्, व्यासगणेशयोः समयप्रसङ्गे व्यासकूटप्रसङ्गः, व्यासकर्तृका ब्रह्मसूत्रव्याख्या, पृथिव्यां परावर्तनम्, हरिहरभट्ट-रङ्गनाथयोर्माधवभट्टशिष्यत्व-प्राप्तिः सर्गसमाप्तिः— १९-२९

चतुर्थः सर्गः

प्रकारान्तरेण विष्णुस्वामिचरित्रवर्णनम्, विष्णुस्वामिना गृह एव शास्त्राध्ययनम्, उपास्यविवेकः, सर्वेश्वरोपासना, पूजायां सत्यामपि भगवतोऽदर्शनेन अन्नत्यागः, ततो बह्निप्रवेशप्रतिज्ञा, भगवतो दर्शनम्, ततो भगवतोऽन्तर्धानम्, गोलोकेन्द्ररूपेण पुनर्दर्शनम्, विष्णुस्वामिनः प्रश्नः, भगवत उत्तरम्, तत्कर्तृक-भक्तितत्त्वोपदेशः, सर्गसमाप्तिः— ३०-३९

पञ्चमः सर्गः

विष्णुस्वामिना भगवत्प्रार्थना, भगवता पञ्चाक्षरोपदेशः, विष्णुस्वामिकर्तृका भगवत्सेवा, शिष्यसङ्ग्रहः, तेषु आदिमो गोपीनाथः, ततश्च हरिहरः, रङ्गनाथः, गोविन्ददासः, देवजीवः, कृष्णदत्तः, जयदेवः, दयारामः, वोपदेवः, हरिदासः, बिल्व-मङ्गलः, वल्लभाचार्यः, वैष्णवसम्प्रदायचतुष्टयी ब्रह्मरुद्रलक्ष्मी-सनकप्रवर्तिता, तत्र माध्वानां ब्रह्मा, निम्बार्काणां सनकः, रामानुजानां लक्ष्मीः, विष्णुस्वामिनाञ्च रुद्रः सम्प्रदायप्रवर्तकः, विष्णुस्वामिसम्प्रदायस्य प्राचीनत्वे भागवतस्य सर्वदर्शनसङ्ग्रहस्य च प्रामाण्यम्, विस्तरेण विष्णुस्वामिनो जन्मादिविवरणम्, दक्षिणापथे मंदुरापुर्यां पाण्ड्यविजयस्य मन्त्री देवस्वामी, तत्पत्नी यशोमती, अनयोः पुत्रो विष्णुस्वामी, काञ्च्यामेतस्य प्रथमो मठः, तत्र विष्णुस्वामितः पश्चात् क्रमशः देवदर्शनः, श्रीकण्ठः, शतधृतिः, कुमारपादः सहसार्चिः, पराभूतिः,
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ज्ञानेश्वरः, नामदेवः, वल्लभाचार्यः, हरिदासः, वंशीअली, रुद्रदेवः, त्रिपुरारिः, विष्णुस्वामी, राजविष्णुः, बिल्वमंगलः, देवमङ्गलः, प्रभुविष्णुस्वामी, श्रीकान्तः, तत उत्तरभारते विस्तारः, सर्गसमाप्तिः ४०-५०

षष्ठः सर्गः

सतुआबाबापरम्परायां श्रीकृष्णः, रुद्रः, त्रिपुरारिः, विष्णुस्वामी, देवदर्शन-देवमुनि-परमानन्द-आनन्दमुनि-प्रकाशमुनि-कृष्णमुनि-नारायण-जयमुनि-श्रीमुनि-महाचार्य-नित्याचार्य-तत्त्वाचार्य-नृसिंहाचार्य-शुद्धाचार्य-सुबुद्धाचार्य-प्रबुद्धाचार्य-असूयाचार्य-रुद्राचार्य-भगवन्तार्य-रामेश्वर-ब्रह्मयति-चर्याचार्य-सुदयाचार्य-लक्ष्मीनारायण-राजविष्णुस्वामि-बिल्वमंगल-वल्लभाचार्यविठ्ठल-नाथ-यदुनाथ-मधुसूदन-मुरलीधर-ब्रह्मराज-पद्मराज-प्रद्युम्नमुनि-हृषीकेश-वासुदेव-परमानन्द-कल्याणदास-प्रेमजी-सौवलदास-रत्नदास-कृष्णदास-एकदास-राघवदास-धनप्रियदास-दयाराम-रामदास-बलरामदास-परशुरामदास-रणछोड़दास-मोहनदास-भोलादास-दामोदरदास-नरोत्तमदासाः, वर्तमानो महामण्डलेश्वरो यमुनाचार्याः, सर्गसमाप्तिः ५१-६१

सप्तमः सर्गः

रणछोड़दासस्य चरित्रम्; पूर्ववृत्तम्, जेठापटेलप्रसङ्गः, राज्यत्यागः, प्रयागगमनम् परशुरामदर्शनम्, ततो दीक्षा, रणछोड़दासनामप्राप्तिः, काश्यामागमः, मणिकर्णिकावर्णनम् रणछोड़दासस्य काश्यां प्रतिष्ठा, परशुरामस्य त्रिहुटगमनम्, रणछोड़दासतपोवर्णनम्, मुद्रावितरणम्, चणकवितरणम्, बृद्धस्य भिक्षोः चणकचर्वणासामर्थ्यात् तस्मै सक्तुप्रदानम्, सर्गसमाप्तिः ६२-७२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अष्टमः सर्गः

सक्तुप्रदानव्रतम्, भगवतो दर्शनम्, तेनैव सतुआबाबानामकरणम्, चन्द्रग्रहणे राजागमनम्, परस्परं परिचयः, राज्ञा क्षमाप्रार्थना, एतत्कर्तृकं क्षमादानम्, आश्रमादिव्यवस्था, पुरुषोत्तमदासस्य मृतस्य पुनरुज्जीवनम्, सर्गसमाप्तिः ७३-८३

नवमः सर्गः

पुरुषोत्तमाय वरप्रदानम्, पालिताणाराज्याद् भक्तानामागमः, महता समारोहेण मठस्थापनम्, तत्सञ्चालनाय निधिव्यवस्था, रघुरायवृत्तम्, गङ्गातः कनकाहरणम्, रघुरायेण पश्चात् तत्परावर्तनम्, धर्मशालादिव्यवस्था, परमगतिप्राप्तिः, वर्तमानमठाधिपतिकर्तृकव्यवस्थावर्णनम्, विश्वस्मिन् धर्मप्रचारः, सर्गसमाप्तिः ८४-९४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ श्रीः॥

वैष्णववैभवम् महाकाव्यम्

॥ प्रथमः सर्गः॥

आलोहितार्कनवमण्डलरश्मिभिन्न-
सम्वर्तिकाऽनुपमकोकनदातिशायि ।
भूयो विरक्तयतिमानसराजहंसं
विष्णोः पदद्वयमहो ननु नन्नमीमि ॥१॥

ऐरावत-प्रमुख-दिग्गजगण्डसान्द्र-
सिन्दूरसुन्दररसातिमनोहरश्रि ।
स्वर्गापगाकनककोकनदाभिरूपं
भूयः पदद्वयमहः प्रणमामि विष्णोः ॥२॥

भूयस्तरां कमलकोमलकुड्मलश्री-
सब्रह्मचारिललितातिललामलक्ष्मि।
कल्याणकृत् कुलिश-केतन-कञ्ज-मञ्जु
प्रातः स्मरामि भगवत्पदपद्मसद्म ॥३॥

स्वर्गाङ्गनाकबर-कर्बुरबर्बरश्री-
बाभ्रम्यमाण-मधुपावलि-कीर्त्यमानम् ।
स्वर्णाऽरुणोत्पलयुगोदरसोदरश्रि
पादद्वयं निरुपमं प्रणमामि विष्णोः ॥४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किं हेमकोकनदगर्भमनोज्ञलक्ष्मि
किं वाऽपि नन्दन-कुचन्दन-ऽऽधारयाढ्यम् ।
सत्पल्लवालिदल-तल्लज-लालितं यद्
श्रीविष्णुपादकमल-द्वयमानमामि ॥५॥

पूर्णो हि तत्र भगवान् प्रविधाय लोकान्
तत्सृष्टिकार्यकरणे द्रुहिणं व्यधात्सः।
तत्संहृतौ च गिरिशं विनियोज्य पश्चाद्-
आत्मानमेव भुवनस्थितये युयोज ॥६॥

सृष्टिः प्रवृत्तिवशतो रजसोद्भवाति
संहार एष तमसोऽधिकतो निवृत्त्यै ।
सम्पालनं भवति सद्गुण-सन्निवेशात्
तत्कार्यमार्यशरणं विदधे स विष्णुः ॥७॥

सृष्टिस्थितिप्रलयकार्यविधानदक्षो
हेतुः समस्तजगतामपि कार्यसिद्ध्यै ।
सेतुर्जगज्जलधिसञ्चयतारणाय
भूयस्तरां विजयते ननु विष्णुरेषः ॥८॥

यो लीलयाऽतिललितान्ननु दिव्यधाम-
धामप्रकाशलसितानपि लोकलोकान् ।
स्वीय-स्वभाववशतः किल लेखलेखां-
स्तूर्णं ससर्ज सुजनैकहितोत्सवाढ्यः ॥९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

तत्रापि साधनविधीननुसृत्य सोऽयं
भूयो द्विधाऽत्र विदधे तपसः प्रणालीम् ।
एका तयोर्जगति नादपरम्पराख्या
साऽऽसीत् पुनस्तदनु विन्दुपरम्पराऽन्या ॥10॥

वर्णाश्रमोदित-समस्तविधानमाला-
पुष्पच्छविच्छुरितसौभगसौरभश्रीः ।
एषा प्रवृत्ति-पदवी प्रयताऽस्ति पुत्र-
पौत्रप्रपौत्रपरिवर्धितरूपरूपा ॥११॥

आसीद् निवृत्तिमयमार्गसुधाप्रवाह-
धाराद्भुताऽनुपममोदमयी तु या सा ।
शिष्यप्रशिष्यचयचर्चित-तत्त्वचार्वी
संसारदुःखदवभामलयानिलश्रीः ॥१२॥

एतन्निवृत्तिमयमार्गसुधासमुद्रं
प्राप्त्यै बहूनि ऋषिभिः प्रतिपादितानि ।
भूयस्तरां तदयनानि लसन्ति सन्ति
श्रीमद्गुरूक्तिकरुणाप्रकटात्मकानि ॥१३॥

यो दाय एष इह विन्दुपरम्पराढ्यै-
र्लब्धव्य एव पितृवंश-परीतचित्तैः।
सत्पुत्र-पौत्र-विलसत्प्रविभागतस्तु
क्षीणो भवेदनुपलं भुवि सिद्धमेतत् ॥१४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizaqtion by eGangotri

एतद्विचिन्त्य भुवि भाविनिजप्रजाना-
मक्षय्यकोषपरिरक्षणवर्धनार्थम्
श्रीमन्महर्षिमुकुटैनर्नु सृष्टिकालात्
सोपाय एष कथितः खलु सम्प्रदायः ॥१५॥

दायं निरस्य विहितः स तु सम्प्रदायो
भूयः प्रवृत्तिमतिशेत इयं निवृत्तिः।
पुत्रं ह्यतीत्य परिवर्धत एव शिष्यो
नादस्तु राजतितरां समतीत्य विन्दुम् ॥१६॥

सद्यस्तु विन्दुसरणीषु विभाति दायः
भूयस्तु नादसरणीषु स सम्प्रदायः।
नाभेरधस्खलनतस्तु भवेत्तदाद्य
ऊर्ध्वस्थितेः सरणितः प्रभवेद् द्वितीयः ॥१७॥

यन्नाभ्यधस्थित-परम्परया परीता
वर्णाश्रमोदित-सदाचरणव्रताढ्याः।
ये वेद-तन्त्र-कथिताध्वमतामृताक्ताः
ते कर्मयोगपदवीमनुपालयन्ति ॥१८॥

प्रारब्धकर्मपरिलब्धशरीरभाजो
भूयो विधाय मनुजा विहितं स्वकर्म।
पश्चात् सकाममतयोऽपि विहाय रागं
निष्कामकर्मरतयोऽतितरां भवेयुः ॥१९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

निष्कामसौम्यमतयोऽत्यधिकारिणो ये
ते भक्तिमार्गममलं सततं भजन्ते।
तत्रापि नो निजकृते प्रभवेत् कदाचिद्
इच्छाऽपि, सर्वमपि तत् भगवत्कृते हि ॥२०॥

एषा पुनर्निगदिता मुनिभिस्तु शुद्धा
भक्तिः प्रमथ्य निगमागमसिन्धुमेभिः।
आस्वादनैकनिरतैर्भगवत्स्वरूपैः
द्वैतश्रितैर्निजधियाऽद्वयतां निरस्य ॥२१॥

सद्भक्तिमार्गगणमार्गणमार्गमार्गै-
र्गर्गादिभिर्मुनिवरैरपरैः परैश्च।
श्रीविष्णुपादकमलद्वयशीधुसिक्तो
धन्योत्तमो जयति वैष्णवकल्पवृक्षः ॥२२॥

आश्रित्य विष्णुमथ शक्तिमथो शिवं वा
भक्तिर्मता बहुविधा महतां मुनीनाम्।
स्वर्लोकदुर्लभमयी भवतीह सप्त-
स्त्रोतस्विनी त्रिपथगेव भुवं पुनाति ॥२३॥

तत्राप्यहो सगुणनिर्गुणरूपभेदाद्
भिन्नाऽधिकारिवशतः सुवशा विभाति।
लीलामृतातिशयतो भुवनत्रयेऽपि
भूयो हि राजति च वैष्णवभक्तिमार्गः ॥२४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

वैकुण्ठमात्रनिलयो भवतीह विष्णुः
गोलोकलोकनमयो स विभाति कृष्णः।
पूर्वत्र सैव भगवांस्तु चतुर्भुजश्रीः
गोलोकलालितवपुर्द्विभुजो बभूव ॥२५॥

वैकुण्ठधाम्नि भगवानथ शेषतल्पे
लक्ष्मीकराम्बुरुहलालितपादपद्मः ।
गोलोकलोक इह सर्वसखीवृतश्रीः
श्रीराधिकान्वितवपुर्घनकृष्ण एषः ॥२६॥

भूयस्तु मन्मथमहाजयदीक्षितश्रीः
आरात्तु रम्यरमणीरमणीयमूर्तिः।
श्रीराधिकाप्रसभलिङ्गनचारुकीर्तिः
गोलोकपीठमपि मण्डयति प्रकामम् ॥२७॥

स्रोतोविलोमयमुनातटिनीदुकूले
संस्नापिते शरदि शीतगुरश्मिजालैः।
गोपीवृतो रहसि कल्पतरोरधस्ताद्
श्रीराधिकान्वितवपुः स विभाति कृष्णः॥२८॥

भूयोऽन्तरङ्गललितादिसखीसमाढ्य-
सन्मण्डलस्थवृषभानुसुतामनोज्ञः।
रासोत्सवातिरसपूरितविग्रहश्रीः
कृष्णः सदा विषमवाणविमोहनोऽभूत् ॥२९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रासोत्सवातिरससारसुधासरस्सु
मोमुह्यमानहृदयो ननु राजहंसः।
कन्दर्पदर्पदलनैकमहाधनाढ्यः
द्रष्टाऽभवत् त्रिनयनः स हि केवलोऽसय ॥३०॥

लीलारसोत्सवमतिर्भगवच्चरित्र-
माधुर्यधुर्यहृदयैकधनः प्रकामम्।
श्रीशङ्करः स्वयमहो प्रययौ कदाचित्
गोलोकमेव स हि भक्तिरसाप्लुतश्रीः ॥३१॥

तत्र स्वयं खलु तदा स ददर्श हर्षात्
प्रेमाश्रुराशिपरिपूरितलोचनश्रीः।
तद्दिव्यमव्ययसुधाद्भुतलीलयाऽऽढ्यं
सत्सामरस्यमथ सामरहस्यभास्यम् ॥३२॥

सच्चित्सुखात्मकमशेषमनोज्ञतत्त्वं
वृन्दावनं सकलरत्नमणिप्रवालम्।
गुञ्जन्मधूत्सवमधुव्रतशिञ्जिताढ्यं
सत्तत्त्वलाभपरिदृष्टविशेषभक्ति ॥३३॥

कल्हारकोकनदसुन्दरपुण्डरीक-
नीलोत्पलैः कुवलयीविहितस्वरूपैः।
कूजत्पतत्रिकलकीर्तितराजहंसैः
प्रेमाम्बुजातपुलका यमुनाऽप्यदर्शि ॥३४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यत्र स्वयं भगवती यमुना विलोमा
ते चातकाश्च शिखिनो मधुपाः कुरर्युः।
श्रीकृष्णचन्द्रवदनामृतपानहृद्य-
वेणुस्वनातिविलयैकलया विभान्ति ॥३५॥

चन्द्रः स्वयं सपदिमार्गगतिं विहाय
कालक्रमातिपरवत्त्वमयाऽऽमयज्ञः।
यत्रर्तुपक्षतिथिपञ्जरपिञ्जितास्यो
मोमुच्यमानमुदितस्तु चिराय तस्थौ ॥३६॥

कृष्णस्तु कोटिकुलमन्मथमन्मथश्रीः
भूयस्त्रिभंगललितानुपमैकलक्ष्मीः।
गोपांगनारुचिरयौवनयौवनश्रीः
तोष्टूय्यमान इह राजति वेदतन्त्रैः ॥३७॥

दृष्ट्वा तमद्भुतमहो पुरुषोत्तमाख्यं
योगीन्द्रचक्रमुकुटीमणिवन्द्यमानः।
सामश्रुतिस्वरसमाश्रयणव्रताढ्यः
तुष्टाव गोकुलपतिं ननु पञ्चवक्त्रः॥३८॥

श्रुत्वा तदीरित-महास्तुति-पद्यराजीं
पम्फुल्यमानहृदयाम्बुज-भासितास्यः।
तस्मै ददौ वरवरं ननु याच्यमानः
लीलारसामृतमयः किल गोकुलेन्द्रः॥३९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीविष्णुपादकमल-द्वितयार्चनश्रीः
शिष्यप्रशिष्य-चयनादपरम्पराढ्यः।
सद्भक्तवृन्दहृदयाब्जविकारकारी
भूयात् क्षितौ सगुणभक्तिकसम्प्रदायः ॥४०॥

लब्ध्वा परं तु परमं वरमेष मन्त्रं
लोकोत्तरातिशय-सम्मदमोदमानः।
विश्वेश्वरः सपदि विश्वमिदं प्रसन्नः
सद्यः समुद्धृतमभूदिति निश्चिकाय॥४१॥

हृतधन इव कश्चित् प्राप्तहेमाद्रिकूटः
प्रमथपतिरथाभूद् लब्धसर्वस्व एव।
तदनु च शनकैरागत्य कैलाशधाम
सपदि मुदितचेताः सुप्रसन्नो ननर्त ॥४२॥

त्रिनयनमथ दृष्ट्वा नारदोऽसौ सुरर्षिः
सपदि धुरि समन्ताच्चिन्तयामास भूयः।
पुनरपि भगवान् किं पञ्चबाणं ददाह?
त्रिपुरमथनलीलां किं पुनर्वाऽऽततान? ॥४३॥

प्रमथसमुदयास्ते तं परिक्रम्य भूयो-
प्यतिनतिहृदयाढ्याः सर्व एवं ननर्तुः।
सकलललनयाऽऽसौ देवसंघोऽपि तत्र
नयनकमललक्ष्मीं वर्धयामासुरारात् ॥४४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

चरणकमलयुग्मं हन्त शम्भोः प्रणत्य
सुरऋषिमुनिपूज्यो नारदोऽसौ सुरर्षिः।
सकलसुरगणैस्तैस्साग्रहं नोदमानो
भवति च किमिदं पप्रच्छ नम्रः प्रहृष्टः ॥४५॥

अथ स विनयनम्रं नारदं तं विलोक्य
परिहृतसमनृत्यः पात्रमस्तीति बुद्ध्वा।
कलिकलुषकुलायोद्धारधारानिदानं
वरमधिगतमूचे गोकुलेन्द्रप्रसादात् ॥४६॥

तं श्रीपतेर्वदनपद्ममधूपमेयं
श्रुत्वा वरं तु परमं जगदप्रमेयम्।
श्रीशुद्धभक्तिरतवैष्णवचारुगेयं
हृष्टः सुरर्षिरभवद् गिरिशप्रसादात् ॥४७॥

तत्तत्त्वरत्नममलं हि सुधैकसिन्धुं
श्रीनारदाय मुनये प्रथमं ददौ सः।
नूनं तदर्हमधिकारिणमित्यवेक्ष्य
बीजं समुप्तमचिरात् फलति प्रकामम् ॥४८॥

समधिगतमहामन्त्रस्तु देवर्षिरेष
प्रमुदितहृदयाम्भोजातफुल्लास्यलक्ष्मीः।
कलिकलुषजनानुद्धर्तुकामोऽप्यकामः
जगति सगुणभक्तेः सम्प्रदायं व्यतानीत् ॥४९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इत्थं श्रीपुरुषोत्तमादुदभवद् यः सम्प्रदायः पुरा
निष्ठाभक्तिसमेधमानसगुणश्रद्धासमाराधनः।
विष्णुस्वाभिसमाख्यया समभवत् प्राचीनपारम्परी
सैषा सम्प्रतिभाति सम्प्रतितरां मह्यां मुहुर्वैष्णवी ॥५०॥

गोपीनाथकृपाकटाक्षविगलत्पीयूषसंस्नापितो
योऽयं श्रीमनुदेवनामककविस्तस्य प्रबन्धेऽधुना।
आद्यो हन्त विशुद्धवैभवमहाकाव्यानुजेऽस्मिन् महा-
काव्ये वैष्णववैभवे निरुपमे सर्गोऽभवन्मञ्जुलः॥५१॥

॥ इति श्रीमत्सकलसतीशिरोमणिश्रीमद्वीणापाणिदेवी-
व्यासकूटाविष्कारकमहाकविपण्डितेन्द्रश्रीपशुपतिभट्टाचार्यकनिष्ठ-
सुतमनुदेवभट्टाचार्यकृते वैष्णववैभवे महाकाव्ये प्रथमः सर्गः॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ श्रीः॥

वैष्णववैभवम् महाकाव्यम्

॥ द्वितीयः सर्गः॥

विद्याधरोऽप्सरोयक्षरक्षोगन्धर्वकिन्नरैः।
पिशाचैर्गुह्यकैस्सिद्धैर्भूतैस्तै र्देवयोनिभिः॥१॥

आदित्यैर्वसुभिर्विश्वेदेवैराभास्वरैरपि।
तुषितैरनिलैः साध्यै रुद्रैश्च महाराजिकैः॥२॥

सर्वैर्विभूषितस्यास्य कैलाशस्य महागिरेः।
काप्यपूर्वा पूर्वतोऽभूदभिख्याऽख्यातसङ्ख्यया॥३॥

शिवरात्रिकालिकेव सुषमा साऽसमाऽभवत्।
नारदः कृतकृत्योऽभूत् सच्छाब्दिक इव स्वयम्॥४॥

सन्तोषो नाऽभवत्तस्य देवर्षेरमितौजसः।
नूनं किमपि कर्तव्यं सम्प्रत्यप्यवशिष्यते॥५॥

इतस्ततो यत्र तत्र भ्रामं भ्राममहो मुनिः।
किं कर्म करवाणीति वाणी तस्य समुद्गता॥६॥

श्रीमद्विष्णुपदद्वन्द्वं द्वन्द्वराशिविनाशकम्।
स्मारं स्मारं स्मराराति स्मरणीयमचिन्तयत्॥७॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ततस्तद्हृदयाम्भोजं ज्ञानदीपेन भास्वता।
अचकात्तु तदा सोऽपि मुनिराजस्स्म मोदते॥८॥

ततो विष्णुपदाम्भोभ्रमद्भ्रमरमानसः।
सत्पात्राय स तद्दातुं निश्चिकाय सुनिश्चयः॥९॥

करालकलिकालाग्निदन्दह्यमानचेतसाम्।
समुद्धाराय जीवानामुपायोऽपायवर्जितः॥१०॥

चिन्तामनननिष्ठश्रीः मन्त्रयन्त्रसमन्वितः।
अधिकारिराजलभ्यः सम्प्रदायः सतां मतः॥११॥

अथ द्वापरसन्ध्यंशे शान्तनौ शासति क्षितिम्।
वेदव्यासोऽवतीर्णोऽभूदंशांशकलया हरेः॥१२॥

ब्रह्मणो मानसात्पुत्रात्सप्तर्षन्यतमादहो।
वशिष्ठात् सूर्यवंशीयनृपाणां गुरुतस्तथा॥१३॥

चतुर्थश्शक्तिपादाब्जभक्तिव्रतसमुज्ज्वलात्।
महाशक्तिकृपाऽपाङ्गसाङ्गशक्तिसमन्वितात्॥१४॥

शक्तिप्रसादाप्तशक्तेश्शक्तिनामधरादपि।
शक्तितस्तु तृतीयोऽयं शक्तिभक्त्यनुरक्तिधीः॥१५॥

ततः पराशरात्तस्मात् पराशक्तिमहाद्युतेः।
देशकालान्तरच्छेत्तुः कलौ स्मार्तविधायकात्॥१६॥

यमुनाम्भोविहाराढ्या साऽद्रिकाऽप्सरसां वरा।
चेदिराजवसोर्वीर्यं दधार धारणान्विता॥१७॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

महामुनिशापलब्धमत्स्यरूपाऽभिरामभा।
सुषुवे साऽथ पुत्रौ द्वौ जगन्मण्डलभाग्यतः॥१८॥

अथ काले दाशराजः सर्वकैवर्तकेश्वरः।
आवर्तनसमावर्तवर्तमानर्त्तुसंरतः॥१९॥

नयादानायमानीय धर्तुं मत्स्यान् प्रचक्रमे।
वडिशं क्षेपणीं बद्ध्वा सस्थाप्य च करण्डकम्॥२०॥

महदाश्चर्यमाचर्यमभूत्तदनु तत्र तत्।
जालजालमालमाहो माऽलं मत्स्यबधाय तत्॥२१॥

महत्कष्टं महाकष्टं मिष्टमिष्टं ध्रुवं ननु।
अहो भारः स्वर्णभारो भारहारहरा अरम्॥२२॥

जालजालं नालसेन निगृह्य निजसारतः।
कर्तनाय तस्य नूनमनूनं ध्रुवमुत्सुकाः॥२३॥

महावर्तवर्तमानाः कैवर्तकमहाजनाः।
दाशराजाय ते दासा न्यवेदुर्हृष्टमानसाः॥२४॥

अहो अहमहो मह्यमाहोपुरुषिका तव।
महामत्स्यं विलोक्यासौ परं मोदमुपागतः॥२५॥

वडिशं दंस्यमानोऽसौ कर्मपाशमुपागतः।
संसारावर्तपाथोधौ नूनं जीव इवाभवत्॥२६॥

अथ पाशं छेत्तुकामो दासराजस्स ईश्वरः।
शास्त्रशस्त्रमुपादाय मुक्तये समपद्यत॥२७॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तत्र गर्भे दर्दशासौ सौभाग्यादखिलक्षितेः।
बालामेकां बालमेकं जीवन्तौ जीवघातुकः॥२८॥

अथ तत्रत्यराजाय निवेद्य निखिलं तदा।
प्रतीक्ष्यमाण आज्ञां च तदीयां क्षणमास्त सः॥२९॥

महीपतिस्तयोर्बालं स्वपुत्रमकरोत् प्रभुः।
कन्यां तु दाशराजाय ददौ तस्मै प्रसन्नधीः॥३०॥

असौ बालो मत्स्यजातो मत्स्यनामाऽभवत् क्षितौ।
प्रसिद्धः स च देशोऽपि तथैव ख्यापितोऽभवत्॥३१॥

अत्यद्भुतमिदं कृत्यं सुमहत् समजायत।
तन्नाम्ना मत्स्य एवाभूदेष देश इहोत्तरः॥३२॥

विसर्पद्मत्स्यगन्धत्वाद् मत्स्यगन्धा तु नामतः।
कन्या सा वासवी नूनं कैवर्तकगृहेऽवसत्॥३३॥

अथ कालं समाज्ञाय कालधर्मैकतत्त्ववित्।
पराशरो महायोगी यमुनापुलिनं ययौ॥३४॥

स तु कालविदां नेता भगवत्प्रेरणाधनः।
अंशांशकलया विष्णोरवतारं सुबुद्धवान्॥३५॥

यमुनातीरमासाद्य साधारकामुको यतिः।
मत्स्यगन्धां ययाचे तु भगवत्कार्यसाधकः॥३६॥

मत्स्यगन्धां पद्मगन्धां विधाय वदतां वरः।
कुज्झटिकां समुत्पाद्य कन्यात्वं परिरक्ष्य तत्॥३७॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तदिच्छया क्षणे तत्र पुत्ररत्नं तदाऽभवत्।
वेदव्यासो महायोगी वेदव्यासविधायकः॥३८॥

श्रौतकर्मविभागेन चतुर्धा व्यस्य ताः श्रुतीः।
तिस्रो लोकोपकाराय कलौ मेधाऽनुसारिणा॥३९॥

नारदात् स तु सम्प्राप्य मन्त्ररत्नमथोज्ज्वलम्।
व्यासस्तु धन्यधन्योऽभूत्कृतकृत्यश्च नारदः॥४०॥

कृष्णद्वैपायनाचार्याद् वेदव्यासाद् मुनीश्वरात्।
परमहंसवृत्तिस्थमहायोगेश्वरेश्वरः॥४१॥

श्रीराधाकृष्णपादब्जपरागरागरूषितः।
शुद्धभक्तिरसास्वादभ्रमरोपममानसः॥४२॥

पुत्रश्श्रीमद्भागवतप्रवक्ता शिवविग्रहः।
लेभे तन्मन्त्ररत्नन्तु तैलविन्दुमिवामृतम्॥४३॥

पश्चात्ततः समभवद् यतिवर्यविष्णु-
स्वामी सदा सहृदयोत्तमबन्धुरेषः।
रात्रिन्दिवं सगुणभक्तिसुधाभिषिक्त
आचार्यवर्य इह लोकहितोत्सवश्रीः॥४४॥

यो द्वापरान्त्यसमये ननु राधिकाढ्य-
श्रीकृष्णचन्द्रपदपद्मपरागरागे।
मोमुह्यमानहृदयभ्रमरायमाणाद्
लेभे शुकाद् यतिवरादथ भक्तितत्त्वम्॥४५॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

व्यासाच्छुकात्सगुणभक्तिमहोत्पलश्री-
पीयूषयूषसदनल्पसुखातिरेकात्।
लब्ध्वा कृपामृतपरो यतिराट् स विष्णु-
स्वामी तदा सफलयां स्वजनुश्चकार॥४६॥

हंहो करालकलिकाल इहास्ति नूनं
द्रंष्ट्राकुलैः कवलयत्यथ कालकालः।
कालानुसारमुत कीलितकेलिजन्तून्
उद्धारयेदनुदिनं महतां प्रयासः॥४७॥

कालस्य तस्य च कलेरयमेव नूनं
भूयो विभाति भुवने गुण एष मान्यः।
श्रीविष्णुपादकमलद्वयशुद्धभक्तिः
सन्तारयेत्सपदि संसृतितः समन्तात्॥४८॥

कीलत्कश्मलकोटिकोटिकलनाकालुष्यकीटोत्कटत्-
कालोत्कीलनकूटकूटकठिनाकाट्यक्रुधत्किल्विषैः।
सङ्कीर्णः कलिकाल एष च महाकालाऽऽननैकाऽनलाद्
जिह्वेयं प्रसरीसरीति सततं भक्तिस्ततः श्रीयताम्॥४९॥

तत्सिद्ध्यै भुवि शुद्धभक्तिमहिता पारम्परीयं मता
विष्णुस्वामित एव या प्रचलिताऽप्यद्याप्यभिन्ना सती।
राराजीति समस्तभक्तविलसच्छ्रीधामवृन्दावन-
प्रोद्भूता जगतीततीष्वनुदिनं मुक्तिर्हि यत्किङ्करी॥५०॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गोपीनाथपदाम्बुजोत्सवसुधामाधुर्यधुर्यव्रतो
योऽस्ति श्रीमनुदेव एष तु गुरोः कारुण्यतारुण्यतः।
श्रीमद्वैष्णववैभवाभिधमहाकाव्येऽधुना मञ्जुलः
सर्गः पण्डितराजवैभवसहोदर्यो द्वितीयो गतः॥५१॥

॥ इति श्रीमत्सकलसतीशिरोमणिवीणापाणिदेवी-निखिलतन्त्रापर-तन्त्रपण्डितश्रीपशुपतिभट्टाचार्यकनिष्ठसुतमनुदेवभट्टाचार्यव्याकरणा-चार्यव्याकरणकेशरिशास्त्रभूषणकृते वैष्णववैभवे महाकाव्ये द्वितीयः सर्गः ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥श्रीः॥

वैष्णववैभवं महाकाव्यम्

॥ तृतीयः सर्गः॥

सम्राड्युधिष्ठिरमहीपतिराज्यमेतद्
नूनं बभौ कलियुगादिमकाल एव।
श्रीकृष्णचन्द्रपदपद्ममहाप्रभावाद्
नायं कलिः किमपि कर्त्तुमसौ शशाक॥१॥

श्रीकृष्णचन्द्रपदपद्मपरागराग-
किञ्जल्ककुञ्जपरिपूतरजोऽभिरामा।
रेजे रजस्तु समतीत्य सदा महीयं
सत्त्वातिरेकवशतः सुकृतैकधामा॥२॥

सम्राड् युधिष्ठिर इहाभवदेष भूपः
श्रीकृष्णचन्द्रपदपद्मपरागभृङ्गः।
तद्दर्शितेन विधिना परिपाल्य पृथ्वीं
कृत्स्नामिमां स तु शतक्रतुमाजहास॥३॥

श्रीकृष्णभक्तिवशतो भुवि फाल्गुनोऽसौ
तत्तन्नराधिपतिखण्डितविग्रहाढ्याम्।
पृथ्वीं विजित्य सहसा भुजवीर्यसारः
श्रीमद्युधिष्ठिरनरेन्द्रवशाञ्चकार॥४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तेने तु वेदधनषोडशऋत्विगाढ्यो
भूयोऽप्यखण्डधरणीपरिमण्डलेन्द्रः।
आखण्डलः स इव सम्प्रति वाजिमेधं
येनाऽभवत् सततमैक्यमहो धरायाम्॥५॥

तस्मिन् युधिष्ठिरमहीन्द्रमणौ समन्तात्
क्षोणीं प्रशासति सति प्रथमे नृपाणाम्।
धर्मप्रभाववशतो जगतीतलेऽस्मिन्
शस्यौषधिप्रचयबृद्धिरभूद् निसर्गात्॥६॥

श्रीमन्महर्षिनृपतिर्वटदाल्भ्यनामा
पार्थेन तेन खलु दिग्विजयप्रसङ्गे।
आरोह्य चारुशिबिकामपि कृष्णदृष्टः
सम्प्रापितो नृपयुधिष्ठिरदर्शनाय॥७॥

विन्दुप्रमाणमपि यस्य मनः कदाचिद्
नो हन्त धर्मपथितः स्खलितं बभूव।
सत्यामृतव्रतधनो हि युधिष्ठिरोऽसौ
नूनं बभौ त्रिजगतीवलयैकभूतिः॥८॥

सम्राड्युधिष्ठिरनरेश्वरशासनाढ्ये
काले शुभेऽभवदहो द्रविडाख्यदेशे।
राजा तु कश्चिदथ तस्य बभूव मन्त्री
नारायणो द्विजवरो ननु भट्टवंश्यः॥९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पुण्ये दिने सपदि भ्राद्रपदाख्यमासे
कृष्णो दलेऽम्बुधितिथौ ननु भौमवारे।
मध्यन्दिने सुभगरोहिणिऋक्षयुक्ते
सद्यस्तरामवततार शिशुःस कश्चित्॥१०॥

लालित्यलास्यललितातिलयाढ्यलोलो
लीलाधनो निरुपमस्मितहास्यलक्ष्मीः।
रेजेऽतिसुन्दरतनुस्त्रिजगल्ललाम-
वक्त्राम्बुजोदितरुचिस्मरशोभमानः॥११॥

यो जातमात्र इह सर्वजगद्विकासि-
तेजःप्रभावलयवर्धितदिङ्मुखश्रीः।
स्पर्शप्रभाववशतोऽतिपवित्रपृथ्वी-
पर्याप्तपुण्यपटलैकनिदानभूतः॥१२॥

मातापितृप्रमुखसर्वजगज्जनौघ-
सत्त्वाभिभूतहृदयाम्बुजभास्करश्रीः।
भूयश्चलत्पदनखाङ्गुलिराजिदीप्ति-
दीप्तप्रभावलयभूषितभूमिभूतिः॥१३॥

यत्स्पर्शसम्भवमनोज्ञपवित्रभावैः
भूयस्तरान्त्रिजगतीप्रयतप्रभावात्।
वेदाननोदिसमस्तमहाकटाह-
ब्रह्माण्डभाण्डविलसत्सुषमाऽसमाऽऽसीत्॥१४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यत्पादयामलमहोत्पलकोमलाढ्य-
शोभाऽभिरामतलतालललयालयश्रीः।
हंहो, अहो!! त्रिजगतीवरवर्णिनीय-
मानन्दमन्वभवदेव तदैव नूनम्॥१५॥

माता पिताऽनुमपपुण्यसमूहमूर्ती
ब्रह्माण्डभाण्डजयकृत्सुकृताभिरूपौ।
श्रीविष्णुमन्त्रजपदीक्षितमानसाब्जौ
लोकातिशायिसुकृतैकफलान्वितौ तौ॥१६॥

आ सृष्टितस्तु समनुष्ठितवैधकार्यौ
काम्यं निषिद्धमपि दूरत एव हित्वा।
नैमित्तिकं विधिमथापि समं समाप्य
भक्तौ तथाऽत्र पितरौ तनयं लभेते॥१७॥

लोलालकस्य मधुरस्मितमण्डितस्य
प्रेङ्खत्पदाब्जयुगलीपरिभूषितस्य।
बालस्य तद्भुवनभाग्यवशाद् मनोज्ञं
नामाऽभवत् सपदि माधवभट्ट एव॥१८॥

काले गते बहुतिथे जगतीतलेऽस्मिन्
श्रीविष्णुभक्तिमतमार्गविभासितश्रीः।
सोऽयं बभूव च विशुद्धमतिस्तु विष्णु-
स्वामीतिनाममहितोऽत्र जगद्गुरुर्यः॥१९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हा हन्त, हन्त, ननु सप्तमवार्षिकस्तु
बालो यदाऽभवदहो हतभाग्यतोऽत्र।
आकारितो मघवतेव पिता ययौ स्व-
र्मायामयाऽऽमयमयं भुवनं विसृज्य॥२०॥

वर्णाश्रमोदितसदाचरणव्रताढ्या
दाम्पत्यबन्धनमहाधनमेदुरश्रीः।
पत्युः पुरः सहमृतिं मनसा विभाव्य
माता तदाऽभवदिहात्र सती सतीव॥२१॥

श्रीमाधवस्तदनु सम्प्रति मातुलेन
श्रीरङ्गनाथविदुषा तरसाऽऽजगाम।
शास्त्रामृतोदधिसुधां परिपातुकामो
वाराणसीं सकलपण्डितराजधानीम्॥२२॥

मार्गे तु पण्ढरपुरस्य नृपेण तेन
सम्मिल्य हन्त पथि मङ्गलसेननाम्ना।
भूयः समुष्य मनसा च सदाशिवाख्य-
विप्रोत्तमादधिगतोऽखिलशास्त्रतत्त्वम्॥२३॥

विद्याः समाप्य सकला अपि शुद्धभक्त्या
सम्प्रार्थितो गुरुवरो गुरुदक्षिणायै।
श्रीव्याससूत्रगतसंशयनाशहेतोः
तं श्रावयार्थमथ तन्मुखपङ्कजतस्तु॥२४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रुत्वा तदीरितवचः सकलं तदैव
श्रीमाधवोऽपि धुरि दिव्यरथं चकार।
आरुह्य तं सपदि योगमहाबलाच्च
श्रीव्यासदर्शनकृते गमयाम्बभूव॥२५॥

आरोह्य तत्र च गुरुं स्वयमत्र पश्चात्
तस्यानुजं हरिहरं ननु रङ्गनाथम्।
तत्पुत्रमेवमखिलान् तरसा रसायां
व्यासाश्रमं स विगतश्रम एव चाप्नोत्॥२६॥

आबद्धकेशरजटाग्रथनाऽभिरामं
भूयस्फुरद्धुचिमहारुचिराङ्गरम्यम्।
शिष्यप्रशिष्यचयचर्चितपादपद्मं
व्यासं मुदा मुनिवरं ददृशुस्त आरात्॥२७॥

श्रीमत्पराशरऋषेस्तनयो मुनीन्द्रः
कृष्णाङ्घ्रिपद्ममधुस्य शुकस्य तातः।
कर्तुं तथान्यथयितुं तदकर्त्तुमीशो
व्यासस्तु लोचनपथं स बभूव तेषाम्॥२८॥

यद्दिव्यजन्म च पितुस्तपसोऽतिरेकात्
सृष्टिप्रभृत्यथ च सत्यमहोनिदानात्।
भूयश्चतुर्दशमहाण्डकटाहलोकान्
पातुं चतुर्दशविधिप्रचयैर्बभूव॥२९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

व्यासं पराशरमुनिर्ननु शक्तिपुत्रो
नारायणांशमहितं तनयं स लेभे।
यो जातमात्र इह मातरमाप्रणम्य
साऽऽपृच्छ्य हन्त तरसा तपसे जगाम॥३०॥

द्वीपे बभूव स सरस्वतिनिर्झरिण्याः
प्रत्यग्रवारिदरुचिर्विरजो रराज।
यो भारतादिकमहो कवयाञ्चकार
द्वैपायनेत्यभिधया प्रथयाम्बभूव॥३१॥

व्यासोऽभवत्स्वतपसा स्वधिया समस्त-
शाखाविभागकरणादथ वेदपूर्वः।
केदाररूप इह वेदतरोर्मतोऽसौ
केदाररूपबदराश्रमसंस्थितत्वात्॥३२॥

पुण्यास्पदे तुहिनपर्वतपाददेशे
स्थित्वा पुनर्गिरिगुहालय एव शुद्धे।
देहं विशोध्य कुशसंस्तरमाश्रितोऽसौ
शास्त्राणि स प्रणिनिनाय मतानि तानि॥३३॥

अष्टादशाऽपि च विधाय पुराणराजिं
सान्तोषलेशमपि नैव यदा स आप्स्यत्।
श्रीनारदाननसरोजमधूपमेयं
हंहो शुकार्थमकरिष्यददः पुराणम्॥३४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रौतप्रयोगविधिनाऽपि यथास्वरं तु
शाखाविभागदिशयाऽखिलवेदराशिम्।
कर्तुः श्रुतित्रयचतुष्टयनिर्णयस्य
व्यासस्य शोधयितुमर्हति वा ऋणं कः?॥३५॥

नैष्कर्म्यसिद्धिमपि भागवतच्छलेन
चक्रे स्मृतिं विहितकर्मविधानहेतोः।
श्रीब्रह्मसूत्रमणिमारचयाम्बभूव
यो ज्ञानमार्गविधयेऽद्वयशीधुसिद्ध्यै॥३६॥

आचार्यहीरमणिहारसुगुम्फनाढ्या
नारायणात् प्रभृति भाति परम्पराश्रीः।
व्यासस्तु तत्र भजते ननु षष्ठकोटी-
मुद्बोध्य साधनबलेन तु षष्ठपद्मम्॥३७॥

सर्गस्थितिप्रलयहेतुविमर्शनात्म-
कालात्मकं तदतिकालमहो रहस्यम्।
यः सूर्यचन्द्रकुलभूपतिवर्णनाढ्यं
श्रीभारतच्छलत एष उपाचचार॥३८॥

ग्रन्थं महान्तमिह तद्रचयाञ्चकार
यो लक्षपद्यमहितं भुवि भारतं यद्।
तल्लेखनाय परितो न विलोक्य शक्तं
ब्रह्माज्ञया गणपतिं तरसाऽऽजुहाव॥३९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तत्रोभयोरभययोरभयोरभूत्तु
दिव्यात्मनोस्समभयोस्समयोऽसमोऽसौ।
'लेख्यं न किञ्चिदपि चाक्षरमप्यबुद्ध्वा'
'मे लेखनी क्वचन शाम्यतु नो कदाचित्'॥४०॥

व्याहृत्य चोमथ रतोऽभवदेव देवोऽ-
सौ सर्ववित् सपदि चिन्तयति क्षणं यत्।
पारेसहस्त्रमपि सारचयञ्चकार
तत्रान्तरे विविधपद्यकदम्बकानि॥४१॥

द्वैपायनो मुनिवरो गणनाथमेनं
तत्राऽवदत् प्रतिभया स्वप्रतिज्ञयाऽढ्यः।
श्लोकानथाष्टशतमष्टसहस्त्रमत्र
यान् वेद्म्यहं मम सुतोऽप्यथ सञ्जयोऽर्धम्॥४२॥

कण्डूतिखण्डनकृते विदुषामलं यत्
तच्छ्लोककूटमधुना ग्रथितं दृढं तु।
भेत्तुं न शक्यमपि गूढतयाऽर्थतस्तु
तद्व्यासकूटमखिलं समुदीर्यतेऽद्य॥४३॥

भूते भविष्यति भविष्यति वाऽभवद् वा
काले समत्र विषमासु समासु दिक्षु।
व्यासं विहाय जगतीव्रततीततीषु
स्पर्धेतकल्पमपि यस्तु गणाधिपेन॥४४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सद्यस्तरामपि सुदुर्लभदर्शनं तं
व्यासं समस्तजगतामुपकारहारम्।
सर्वे पुनः पुनरहो ननु नेमुरेव
किञ्जल्ककुञ्जसुषमं हि तदीयपादम्॥४५॥

पश्चात्तदीयमुखपङ्कजशीधुशुद्धाऽ-
द्वैतामृतं मुहुरहो मधुरं निपरीय।
मायामयाऽऽमयमतं तु निरस्य तूर्णं
साश्चर्यमेतदकरोदिह माधवोऽसौ॥४६॥

समुपगत इहासौ हन्त पृथ्वीं ततस्तु
धुरि हरिहरभट्टं तं तथा रङ्गनाथम्।
अकृत स निजशिष्यं प्रार्थितश्चैव ताभ्या-
मधिवसुमति वर्षान् सप्त रेमे शतं तत्॥४७॥

सपदि भगवदाज्ञापालनैकव्रताढ्यः
तदुदितवचनश्रीमालिकाशोभमानः।
सकलजगति शुद्धाद्वैतपाथोजवृन्द-
मिहिर इह स रेजे माधवः पण्डितेन्द्रः॥४८॥

इति निगदितमेतद् यच्चरित्रामृतौघं
प्रयतमथ च विष्णुस्वामिचारित्र्यपुस्ते।
कतिचन कवयस्ते कीर्तयन्ति प्रकामं
तदितरदपि सर्गे भक्तियुक्ताः शृणुध्वम्॥४९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

गोपीनाथकृपाकटाक्षविगलत्पीयूषविश्रान्तिभूः
र्योऽयं श्रीमनुदेव एष च, गुरोः कारुण्यतारुण्यतः।
जाते वैष्णववैभवाभिधमहाकाव्ये तृतीयो गतः
सर्गो हन्त मुदा यदागमपरीभाषात्मकाव्यानुजः॥५०॥

॥ इति श्रीमद्वीणापाणिदेवी-पण्डितपशुपतिभट्टाचार्यसुत-
मनुदेवभट्टाचार्यकृते श्रीमद्वैष्णववैभवमहाकाव्ये
तृतीयः सर्गः॥

●

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥श्रीः॥

वैष्णववैभवं महाकाव्यम्

॥ चतुर्थः सर्गः॥

पूर्वत्र सर्गे ननु कीर्तितस्तु
योऽयं द्विजो माधवभट्टनामा ।
स एव पृथ्व्यां प्रथितस्तु विष्णु-
स्वामीति नाम्ना विततो बभूव ॥१॥

तदीयचारित्र्यमहोत्पलश्री-
समेधमानाद्भुतसौरभाढ्या ।
भोगीशभोगाजिरसंस्थितेयं
वसुन्धरा सम्प्रति मोमुदीति ॥२॥

यदुक्तमत्रात्रभवच्चरित्रं
संसारासिन्धूत्तरणैकमित्रम्।
कषायकर्मोद्धरणात् पवित्रं
पुनाति भूयो जगदेकसत्रम् ॥३॥

अथोचुरन्ये कवयः समन्तात्
समे पुरावृत्तप्रवृत्तिमन्तः।
तदीयवृत्तं ननु वृत्तमन्यत्
तदत्र मान्या मनसा श्रृणुध्वम् ॥४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

अशेषसंस्कारविभास्यमानौ
पवित्रबुद्धिप्रचयैकराशी।
भूयस्तरां भागवतप्रधानौ
धन्योत्तमौ तौ पितरौ धरण्याम् ॥५॥

समस्तपुण्यातिशयप्रकर्ष-
प्रसूतसद्भाग्यविलासभाजौ।
आसृष्टि शास्त्रोदितवैधवर्ज्य-
परम्परापालनदक्षपक्षौ ॥६॥

एवं समन्ताद् महतोः स्वपित्रोः
लब्ध्वा यथाकालमिहैव जन्म।
जगत्समुद्धारदृढप्रतिज्ञं
कुलं समस्तं समतारयद् यः॥७॥

तथापि लोकोदितमार्गदृष्ट-
मर्यादया चापि दयान्वितोऽसौ ।
गृहे पपाठ स्वयमेव विष्णु-
स्वामीह सच्छास्त्रकदम्बकानि ॥८॥

सर्वाणि सच्छास्त्रकदम्बकानि
ब्रह्माण्डभाण्डे विलसन्ति सन्ति।
समस्ततत्त्वप्रतिपादिकानि
सदा सदध्येतृमनोहराणि ॥९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अधीत्य सर्वामपि शास्त्रराजीं
रराज भूयो जगतीतले सः।
सद्ब्राह्मणप्राञ्जलमञ्जुलश्रीः
प्रमास्पदप्रौढविमर्शपूर्णः॥१०॥

ततस्तु बुद्धिप्रतिभाप्रभाव-
प्रभाबलोन्मेषनवीनसत्त्वः।
सारातिसारं हि विविच्य भूयो
रेजे समन्तादिव राजहंसः॥११॥

विचारयामास तदा स हन्त
स्वमानसाब्जेऽसकृदेव देवः।
किमत्र कुर्यामहमत्र येन
भवेयमाहो पितृतोऽधिकोऽपि॥१२॥

राजाऽत्र देशे सकलाधिकश्रीः
पिता मदीयस्तु ततोऽपि मान्यः।
इन्द्रानुयायी स कुबेर एष
इन्द्रादयो रुद्रपदं भजन्ते॥१३॥

रुद्रोऽप्यसौ ब्रह्मतनूज एष
स चापि नारायणनाभिपद्मे।
प्राप्नोति जन्म प्रतिकल्पमेव
सदैव सृष्ट्येककृतिप्रबद्धः॥१४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मत्स्यादिरूपैस्स्वदशावतारै-
र्नारायणोऽसौ परवान् विभाति।
आ चैव तस्मात् सकलोऽपि लोको
नहि स्वतन्त्रः क्वचिदस्ति कश्चित् ॥१५॥

ततस्तु सर्वं परिभूय भूयो
नूनं त्रिलोकीवलयस्वतन्त्रम्।
सर्वेश्वरं चोपनिषत्प्रमाणं
भजामि भक्त्या भुवनप्रभुं तम् ॥१६॥

सर्वेश्वरस्यापि भवेदनन्या
सोपासनाऽन्यूनमहोत्सवैस्तैः।
सदा त्रिलोकीवलये महाढ्य-
राजोचारैरनिशं विधेया ॥१७॥

विचिन्त्य चैवं तरसा हृदब्जे
शय्याऽऽसनच्छत्रवितानपीठैः।
सिंहासनाद्यैः परिशोभमानं
सर्वेश्वरं सन्ततमाननाम ॥१८॥

धूपैश्च दीपैश्च सुगन्धमाल्यैः
दूर्वाङ्कुरप्राञ्जलशोभितैश्च।
पोस्फुटयमानाम्बुजसञ्चयैस्तैः
सर्वेश्वरं सर्वहिताय भेजे ॥१९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कवीन्द्रवक्त्राम्बुजहृद्यगद्य-
पद्याभपद्मोत्सवफुल्लशोभैः।
मल्लीमतल्लीरचनालिमाला-
मतल्लिकालालितलोललीलम् ॥२०॥

देवेन्द्रनेत्रोत्सवचारुलीला-
धम्मिलमाल्योद्गमगन्धमुग्धैः।
शोभाभिरामाद्भुतवैभवश्री-
मनोमनोज्ञप्रतिभोत्सवाढ्यम्॥२१॥

यथार्थनामानमहो महोभिः
महामहं तं महनीयमूर्तिम्।
मह्यां मुहुर्यस्तु महीयतेऽसौ
सर्वेश्वरं यः कवयाञ्चकार ॥२२॥

जगत्कटाहे समुदग्रकीर्तिः
मुहुस्त्रिलोकीकमनीयमूर्तिः।
वसन्तपुष्पोत्सवगात्रलक्ष्मीः
सर्वेश्वरः सन्ततमाविभाति ॥२३॥

चिराय पूजां स विधाय नित्यं
लेभे न किञ्चित् फलमत्र हन्त।
तदा तदाऽऽराधनदीक्षितोऽपि
निर्वाणबाणप्रविदग्ध आसीत् ॥२४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ततस्तु निर्वेदसमाकुलोऽसौ
ध्रुवं प्रतिज्ञाय चिरं स तस्थौ।
'नाङ्गीकरिष्यत्यथ मत्सपर्यां
नान्नं ग्रहीष्याम्यमुतः परस्तात्॥२५॥

उपोष्य पश्चादथ षड् दिनानि
यदा व्यतीतानि च तानि हन्त।
स सप्तमेऽस्मिन् दिवसे तु भूयः
महाप्रतिज्ञामथ तां चकार॥२६॥

सर्वेश्वरार्चादिविधानकाले
नित्यं यथा तत्र चकार पूजाम्।
तत्पुष्पमाल्यस्तुतिधूपदीप-
नैवेद्यमालाजपदक्षिणाढ्याम्॥२७॥

ततः प्रतिज्ञामतुलामवादीद्
मदीयसेवाग्रहणं नहि स्याद्।
तदाऽद्य नूनं त्रिजगत्समक्षं
बह्निप्रवेशं ध्रुवमाविधास्ये॥२८॥

दिङ्नायिकानां श्रुतितस्तु सद्यः
पपात भूमौ ननु पल्लवश्रीः।
दिग्दन्तिनां बृंहितमद्य मद्य-
हीनं तदोपांशुसमं बभूव॥२९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सम्वर्तकानां ततयस्ततो या
मूकत्वमापुः किल लज्जयाऽऽढ्याः।
सुदर्शनो विष्णुकरे तु पङ्गुः
करेऽचलाऽभूद् द्रुहिणस्य माला॥३०॥

एवं प्रतिज्ञां प्रयतामपूर्वा-
माकर्ण्य सृष्टिस्थितिनाशदक्षाम्।
स षड्गुणैश्वर्यधनस्तदानीं
संर्वेश्वरो हन्त मुदाविरासीत्॥३१॥

मोमुह्यमानभ्रमरालिमाल-
पम्फुल्यमानाम्बुजमालिकाश्रीः।
तोष्टूयमानोऽमितपार्षदैस्तैः
सर्वेश्वरो नेत्रपथं जगाम॥३२॥

स्वभक्तचिन्तामणिकल्पवृक्षः
तदर्पितार्चास्तुतिमप्रमेयाम्।
प्रेम्णाऽग्रहीत्तां विधिनादरेण
तोतुष्यमानाम्बुजचित्तसद्मा॥३३॥

एषोऽपि भूयः प्रणिपत्य मूर्ध्ना
विश्वासविद्याविनयान्वितेन।
श्रद्धासमृद्धाद्भुतवैभवेन
सर्वेश्वरं तं कृतकृत्य आसीत्॥३४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

अहो, अहो!! भाग्यवती पवित्रा
वसुन्धराऽथार्थवती बभूव।
तद्भारवाहश्रमगौरवश्रीः
शेषोऽप्यशेषोदय एष आसीत्॥३५॥

अन्तर्हितः सोऽपि बभूव सद्यः
तदाऽऽविरासीत् पुरतस्तु तत्र।
श्रीसच्चिदानन्दघनस्वरूपः
साक्षात् परब्रह्मतयाऽभिमान्यः॥३६॥

अनाहतश्रीमुरलीमनोज्ञ-
बोभूष्यमानद्वयपाणिपद्मः।
यो वामदक्षोभयपार्श्वयोस्तु
श्रीस्वामिनीसङ्गशुभाङ्गलक्ष्मीः॥३७॥

झणज्झणत्कङ्कणकिङ्किणीकैः
रणद्रणद्शिञ्जितहंसकैश्च।
क्वणत्क्वणत्सद्रशनास्वनैश्च
सर्वेश्वरस्सोऽपि मुमोह मोहम्॥३८॥

उवाच वाचं प्रणिपत्य विष्णु-
स्वामी तदा स्वामिनमेनमेवम्।
भवान् कथं चाद्य समागतोऽत्र?
प्रश्नो मदीयो हृदये ह्युदेति॥३९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

पुराणतन्त्रप्रतिपाद्यहृद्या-
भिरामरूपाकृतिमान् भवांस्तु।
समस्तशोभावलयातिरम्यः
साकारसंस्कारविदेकमान्यः।।४०।।

अहं पुनस्सेवितवान् समन्ताद्
आम्नायशीर्षप्रतिपाद्यरूपम्।
तं विश्वकर्तारमजं तु सर्व-
प्रभुं तदा निर्गुणमप्रमेयम्।।४१।।

निशम्य वाक्यं मधुरं तु विष्णु-
स्वामीरितं श्रीभगवानुवाच।
मत्तो गरीयान् यदि कश्चिदीशः
त्वदीयसेवां स कथं न मेने?।।४२।।

मयाऽपि चोरीविहिता हि चौर्यात्
कथं न मां दण्डयति प्रभुश्चेत्?।
तदा तदाकर्ण्य वचस्तु विष्णु-
स्वामी मुदा स्वामिनमाननाम।।४३।।

'अहो, अहं त्वां शरणम्प्रपन्नः
जगत्समग्रैकशुभालयश्रि।
माहात्म्यमास्थाप्य निजं, मदीय-
शङ्काकलङ्काङ्कहृदं पुनीहि।।४५।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इत्थं निजानुगतवाकमहो निशम्या-
नन्तप्रशान्तहृदयं तमथो निभाल्य।
भूयोऽधिकारधिषणावलयं तमेनं
सद्भक्तितत्त्वमखिलं कृपया जगाद॥४६॥

युक्तिप्रमाणविलसन्मतिवादजालं
भूयो निरस्य च कुतर्कविकारमार्गम्।
आम्नायकल्पतरुसङ्कलितामृताब्धिं
लोकेष्टये स्म तनुते भगवत्स्वरूपम्॥४७॥

श्रुत्वा तदीरितवचोऽमृतसिन्धुविन्दुं
सिद्धान्ततत्त्वमणिमाल्यविभूष्यमाणम्।
सद्योऽभवत्स कृतकृत्यमतिस्तु विष्णु-
स्वामीह शास्त्रपरिपालनसेतुहेतुः॥४८॥

अन्धो यथा भवति लब्धविशालनेत्रो
रङ्को यथा विपुलराज्यविभूष्यमाणः।
यः पूतिमान् परिमलामलगन्धिरेष
सोऽयं स्वयं हि भगवत्कृपया रराज॥४९॥

गोपीनाथपदारविन्दविगलत्पीयूषविश्रान्तिभूः
योऽयं श्रीमनुदेवशाब्दिककविस्तस्य प्रबन्धेऽभवत्।
श्रीमन्मारुतिपद्यकाव्यशतकव्याख्याञ्जनासोदरः
सर्गो वैष्णववैभवाभिधमहाकाव्ये चतुर्थोऽधुना॥५०॥

॥ इति श्रीमत्सकलसतीशिरोमणिरत्नवीणापाणिदेवी-व्यासकूटा-विष्कारकपण्डितेन्द्रश्रीपशुपतिभट्टाचार्यकनिष्ठसुतव्याकरणाचार्य-व्याकरणकेशरिशास्त्रभूषणशास्त्रार्थमहारथश्रीमनुदेवभट्टाचार्य-विरचिते वैष्णववैभवे महाकाव्ये चतुर्थः सर्गः॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥श्रीः॥

वैष्णववैभवम् महाकाव्यम्

॥ पञ्चमः सर्गः॥

भूयः प्रणत्य शिरसा स उवाच विष्णु-
स्वामी तदा प्रभुवरं जगतीशमेनम्।
सर्वेश्वरं त्रिदशराजिविराजिताङ्घ्रिं
लोकोद्भवस्थितिविनाशकरं निजेष्टम्॥१॥

'आहो, भवान् परिकरैस्तु विराजमानो
नूनं ममात्र निलये करुणापरीतः।
भूयोऽकल्प्यकमनीयतनुश्रियाऽऽढ्यः
धन्यञ्च मां कुरु मुदा नितरामुषित्वा॥२॥

एवं निशम्य भगवान् ननु तत्र विष्णु-
स्वामीरितामलवचोऽमृतमाशु सद्यः।
मेनेऽधिकारमहनीयमनोज्ञमूर्ति-
मेनं पुनश्च कृपया तरसाऽऽदिदेश॥३॥

हे भक्तशेखरमणे, ननु मामकीनां
सेवस्व मूर्तिममलामपि शुद्धभक्त्या।
ऊरीभविष्यतितमामिति तं विविच्य
पञ्चाक्षरं ह्युपदिदेश तदैव तस्मै॥४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

किञ्चापि तत्र कथितं हि तदैव तस्मै
गीताऽपि भागवतमस्ति परं हि शास्त्रम्।
धर्मोऽस्ति मुख्य इह साऽपि मदीयसेवा
प्रेमाऽप्यसौ परमसाधनमस्ति चाप्त्यै॥५॥

इत्येवमेनमुपदिश्य ततस्तु तत्र
श्रीशुद्धभक्तिपदवीविमलञ्च सद्यः।
अन्तर्हितोऽभवदहो भगवांस्तु विष्णु-
स्वामी सदा त्रिजगतीकृतकृत्य आसीत्॥६॥

आनन्दकन्दलिरसाप्लुतशुद्धचित्त-
सत्त्वातिरेकनिचयाम्बुधिभङ्गरङ्गैः।
आपूर्यमाण इह धारयितुं कथञ्चिद्
शक्तो बभूव न मुदं प्रभुपादभक्तः॥७॥

पश्चात्ततो भगवदुक्तविधानरीत्या
प्रत्यग्रदर्शनदिशा च विधाय मूर्तिम्।
निष्कामचित्तकमलोदर एष विष्णु-
स्वामी जगत्प्रभुममुं सततं सिषेवे॥८॥

लोकोपकारकरणाय च सोऽपि सद्यः
सच्छिष्यसङ्ग्रहमथाऽऽरचयाञ्चकार।
यश्चादिमोऽभवदहो भुवि तेषु गोपी-
नाथस्तु चैत्रसितपक्षगृहीतजन्मा॥९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एवं पुनर्हरिहरोऽप्यथ रंगनाथो
गोविन्ददास इह वा ननु देवजीवः।
श्रीकृष्णदत्त-जयदेव-दयाढ्यराम-
श्रीवोपदेव-हरिदासमुखा बभूवुः॥१०॥

एषा तु या जयति शिष्यपरम्पराश्रीः
पुष्पस्तवस्तवकगुच्छनिभस्तु तत्र।
श्रीबिल्वमङ्गल इति प्रथितः पृथिव्यां
संसारमंगलमयो गुरुधीर्बभूव॥११॥

शिष्या बभूवुरथ सप्त शतानि हन्त
सर्वेश्वरप्रयतपादसरोजभृङ्गाः।
श्रीमद्गुरूदितकृपावलयाऽऽलयाढ्याः
सद्वैष्णवोचितसमस्ततपोमनोज्ञाः॥१२॥

सद्यस्तरांस्मरणपापविनाशकानि
प्रत्यूहपाशजटिलामयवारकाणि।
सद्भक्तितत्त्वसरसीजमधूपमानि
नामानि भक्तहृदये विलसन्ति सन्ति॥१३॥

तत्तत्तपस्वितनयोत्तमतापसा ये
तातप्यमानतपसाऽप्यपसारिताघाः।
सृष्टिप्रभृत्यथ पवित्रचरित्रसत्राः
शिष्यास्त एव भुवि केचन कीर्तिमन्तः॥१४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कालो गते बहुतिथे विकटे कराले
काले कलौ किल विलोक्य सुदूरदृष्टिः।
श्रीवल्लभः सपदि योऽत्र चिराद् विलुप्त-
प्रायं मतं स तु पुना रचयाञ्चकार॥१५॥

सर्वेश्वरं प्रभुवरं प्रणिपत्य शुद्धा-
द्वैताभिधामृतमृतं परिकल्प्य पृथ्व्याम्।
भूयस्तरां जगति भागवतादिरत्न-
ग्रन्थानिमानपि च भूषितवान् स्ववाग्भिः॥१६॥

एवं हि बोध्यमिह सर्वविपश्चिदीशैः
भूयो लसन्ति भुवि वैष्णवसम्प्रदायाः।
चत्वार एव खलु तेष्वभवन् प्रधानाः
लोकोपकारकरणैकमनोऽभिरामाः॥१७॥

श्रीब्रह्मरुद्रकमलासनकाख्यशैलाद्
ते सम्प्रदायसरितो विमलप्रवाहाः।
सत्पुण्यराशिसलिलैरवगाहनेन
भूयस्तरां त्रिजगतीवलयं पुनन्ति॥१८॥

श्रीब्रह्मदेवपदतो ननु मध्वभाजो
निम्बार्कमार्गरसितास्सनकादितस्तु।
रामानुजीययतयोऽपि रमापदाढ्या
रुद्रात्प्रभृत्यथ च विष्णुपथानुगास्ते॥१९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आचार्यवल्लभवरो ननु रुद्रपाद-
मोमुद्यमानहृदयभ्रमरायमाणः।
आसीदतस्तु भुवि रुद्रमताढ्यविष्णु-
स्वामीरितामृतमहो महुरापपौ सः॥२०॥

सन्देहलेश इह वैष्णवसम्प्रदाय-
पारम्परीषु क्वचनाऽपि न कश्चनास्ति।
प्राचीनमेतदथ तद् भवति प्रकामं
सिद्धान्ततत्त्वमखिलं विदुषां पुरस्तात्॥२१॥

अध्यायसप्तमकभागवतस्य चाद्ये
स्कन्धे विभाति ननु पञ्चमषष्ठपद्ये।
श्रीश्रीधरेण मुनिना लिखितं समन्ताद्
व्याख्यासु तत्र तु यथार्थसमस्तवृत्तम्॥२२॥

श्रीसायणार्यकृतदर्शनसंग्रहेऽपि
साकारसिद्धवचनानि पुरो विधाय।
भूयश्च भागवतवेदमताढ्यंविष्णु-
स्वामीरितामृतवचांसि समुद्धृतानि॥२३॥

एतस्य जन्म-कुल-वृत्तमयं समन्ताद्
वृत्तान्तवृन्तमिह यत्प्रथमं मयोक्तम्।
तत्स्पष्टमेवमखिलैरखिलं बुधैस्तैः
सामस्त्यतः सपदि चात्र हि बोधनीयम्॥२४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीभारतस्य दिशि तत्र हि दक्षिणस्यां
राज्यं स्म भाति मधुरं मदुरेति नाम्ना।
तत्रैव पाण्ड्यविजयाभिध एष कश्चिद्
राजा बभूव भुवि भूषणभूषिताङ्गः॥२५॥

तस्याभवत् कुलगुरुस्स तथैव मन्त्री
राष्ट्रोन्नतिप्रणयनप्रकटप्रभावः।
पत्नी च तस्य हि यशोमतिदेवि एषा
भूयोऽवच्छुभयशोरमणीयमूर्तिः॥२६॥

आजन्मसुन्दरमतिस्स बभूव देव-
स्वामी समस्तविदुषामिह सोऽग्रगण्यः।
पत्नी च तस्य पतिपादसरोजभृङ्गी
सङ्गीतचारुवचना च यशोमतिस्सा॥२७॥

ताभ्यां जगत्त्रितयपुण्यपरम्पराभ्यां
साकारभक्तिमतवारिजषट्पदाभ्याम्।
अद्वैतशुद्धपथपान्थनितान्तधीम्यां
सत्पुत्ररत्नमपि चास्ति स एव विष्णुः॥२८॥

काले गते बहुतिथे ननु वेदवाद-
विद्यावदातधिषणातिमनोज्ञमूर्तिः।
आसीत्तदा त्रिजगतीगतिकृत् स विष्णु-
स्वामी यथार्थपदभृत् सुकृताब्जसूर्यः॥२९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एतत् प्रसिद्धमतमस्ति जगत्सु विष्णु-
स्वामी तदैव खलु दक्षिणभारतेऽत्र।
आचार्यपीठमपि तत्र हि विष्णुकाञ्च्या-
मस्थापयत् प्रथमतस्तु मतं समेषाम्॥३०॥

श्रीकृष्णचन्द्रमहिता मथुरा पुरी क्व?
श्रीरामचन्द्रमहिता क्व गताऽस्त्ययोध्या?।
दुर्लङ्घ्यदैवपरतन्त्रकरालकाल-
भोगीन्द्रभीमरसनापरिलीढमेतत्॥३१॥

श्रीदेवदर्शन इति प्रथितो धरायां
श्रीकण्ठ इत्यभिधयाऽपि परस्तदीयः।
एवं पुनश्शतधृतिश्च कुमारपादो
धन्यौ बुधौ तु सहसार्चिपराख्यभूती॥३२॥

आचार्यपीठमथ सम्प्रति विष्णुकाञ्च्यां
संस्थाप्य तत्र च तदा निजशिष्यमुख्यम्।
श्रीदेवदर्शनमहो अभिषिच्य सैष
सन्न्यासमेव जगृहे ननु वैष्णवार्हम्॥३३॥

एवङ् क्रमेण विदितो विदिते हि विद्भिः
प्राचीन एष नितरामिह सम्प्रदायः।
श्रीविष्णुयागकरणैकमहाव्रताढ्यो
भूयस्तरां भुवि विभाति च वैष्णवानाम्॥३४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीरुद्रदेवकरुणामृतयूषसिन्धुः
श्रीवैष्णवोचितसमस्तविधानचुञ्चुः।
साकारमूर्तिसमुपासनदिव्यवर्त्मा
भूयो विभाति भुवने ननु सम्प्रदायः॥३५॥

ज्ञानेश्वरस्तदनु यः खलु नामदेवः
श्रीवल्लभार्य इह यो हरिदास एषः।
वंशीअलीतिविदितश्च समेऽप्यथार्या
एतन्मतस्य परिबृंहणमेव चक्रुः॥३६॥

अष्टादशाक्षरमनुर्हरिणा प्रदत्तो
गोलोक एव च हराय जगद्धिताय।
श्रीवल्लभार्यमतदिग्विजयप्रसंगे
स्पष्टं समीरितमिदं कविना सतोषम्॥३७॥

श्रीरुद्रदेव इह सोऽपि ततः कलाप-
ग्रामस्थिताय महते त्रिपुरारयेऽत्र।
मन्त्रं मुदाऽप्युपदिदेश ततः परन्तु
सिद्धः शिवात्प्रचलितः खलु सम्प्रदायः॥३८॥

एतत्तथापि खलु सम्प्रति सम्प्रदाये
मान्यं मतं तु परितः प्रसरीसरीति।
श्रीव्यासपुत्रशुकदेवकृपाकटाक्षाद्
विष्णुं ह्यदीक्षयदहो त्रिपुरारिरार्यः॥३९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

योगाधिराजशुकदेवकृपापरीतः
साचार्यरत्नमुकुटं त्रिपुरारिरेषः।
साकारभक्तिपरिपूतभुवं तु विष्णु-
स्वाम्यार्यशेखरमदीक्षयदेव देवः॥४०॥

गोपालमन्त्र इह यः प्रथितः पृथिव्या-
मष्टादशाक्षरमयस्त्रिजगद्वरेण्यः।
पूर्णानुरागरससारसरोरुहश्री-
राधाभ्रमद्भ्रमरमाधवगुञ्जनाढ्यः॥४१॥

पूर्वन्तु दक्षिणपदे ननु विष्णुकाञ्ची-
पीठेऽत्र कापि महतीह परम्परेयम्।
आचार्यवर्यनिवहा अभिषेकमापुः
तेष्वेव सोऽस्त्यचरमो धुरि राजविष्णुः॥४२॥

आचार्य एष समभून्ननु तत्र भूत-
ग्रामेऽपि चन्द्रकुलराजसमाश्रितश्च।
पश्चादसौ प्रमुखशिष्यममुं स्वकीयं
श्रीबिल्वमङ्गलमुनिं स्वपदेऽभिषेचे॥४३॥

श्रीबिल्वमङ्गलयतिः स्वपदे स पश्चाद्
श्रीदेवमङ्गलमथाभिषिसेच शिष्यम्।
पीठे ततः परमहो प्रभुविष्णुयुक्त-
स्वामी पुराऽभवदिहाधिपतिर्यतीन्द्रः॥४४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीमद्गोपालमन्त्रं प्रयततममथाष्टादशार्णस्वरूपं
श्रीगायत्रीसमेतं द्रुतमिह परमं सम्विधायाचिरेण।
एतत्पारम्परीं तां त्रिभुवनवलये स्थापयामास यत्नाद्
विष्णुस्वामी प्रकामं प्रमुपदमहितः चाकशीति स्वशिष्यैः॥४५॥

आचार्याणां यमनियमिनां वैष्णवानां समेषां
शुद्धाद्वैताब्जवलयदिवाभूषणानाममीषाम्।
श्रीगायत्रीपरिलसितगोपालमन्त्रः समन्ताद्
जातो नूनं हृदयकमलामोदमानोऽत्र भृङ्गः॥४६॥

तदनु सपदि तस्मिन् विष्णुकाञ्चीस्थिते तु
निरतिशयपवित्रे हन्त पीठोत्तमेऽपि।
यतिमुकुटमणेः श्रीदेवयुङ्मङ्गलात्सोऽ-
धिप इह प्रभुविष्णुस्वाभिवर्यो बभूव॥४७॥

स तु तदनु विनीतं सर्वशास्त्रप्रवीणं
सुमधुररसभक्तिप्राञ्जलप्रौढबुद्धिम्।
जगति सकलशिष्येष्वन्तरङ्गं च बुद्ध्वा
सपदि विहितवाञ्छ्रीकान्तमस्मिन् पदे तम्॥४८॥

शुद्धाद्वैतोदितसकलसिद्धान्ततत्त्वप्रदीपः
श्रीश्रीकान्तो निजमतिबलाद् भारते ह्युत्तरस्मिन्।
भूयो भक्तिप्रभवमधुविन्दून् स बिन्दून् समन्तात्
सत्प्रेम्णाऽऽपाययदथ जगत्क्षेमराजीं चिकीर्षुः॥४९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोपीनाथपदाम्बुजैकमधुपो योऽयं मनुस्तन्महा-
काव्ये वैष्णववैभवे निरगमत् सर्गोऽधुना पञ्चमः।
श्रीवैयाकरणाढ्यभूषणबृहद्ग्रन्थीयरूपालिका-
सोदर्यस्तु तथाह्युकारमुकुलग्रन्थानुजः सुन्दरः॥५०॥

॥ इति श्रीमत्सकलसतीशिरोमणिरत्नवीणापाणिदेवी-व्यास-कूटाविष्कारकपण्डितेन्द्रपशुपतिभट्टाचार्यकनिष्ठपुत्रमनुदेव-भट्टाचार्यव्याकरणाचार्य-व्याकरणकेशरि-शास्त्रभूषण-शास्त्रार्थ-महारथविरचिते वैष्णववैभवे महाकाव्ये पञ्चमः सर्गः॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥श्रीः॥

वैष्णववैभवम् महाकाव्यम्

॥ षष्ठः सर्गः॥

निष्कामकर्मविधितः खलु शुद्धभक्त्या
श्रीज्ञानसौधमपि ये तरसाऽऽप्नुवन्ति।
मान्योत्तमाः सहृदयाः कृतकृत्यभूताः
सिद्धेश्वरा निरुपमाः सततं जयन्ति॥१॥

ये चान्वहं खलु पवित्रचरित्रसूत्र-
सत्रातिमात्रशतपत्रसुपात्रगात्राः।
सत्सौरभातिशयपूतदिगन्तरालाः
ते वैष्णवा निरुपमा नहि कस्य वन्द्याः॥२॥

सद्यस्तरां त्रिजगतीव्रततीततीषु
भूयस्तदीरितकथारसमाधुरीषु।
नक्तन्दिवं मुहुरहो भ्रमरायमाणा
भक्तोत्तमाः सहृदयाःसततं प्रणम्याः॥३॥

तत्राप्यशक्तधिषणा अधिकारिणस्तु
नानागृहस्थविधिजालकलाविलासाः।
तेषां भवेत् स्वगुरुपादपरम्परासु
शुद्धा रतिस्सपदि सा करुणारुणश्रीः॥४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तस्मात् परं किमधुना सतुआख्यबाबा-
पारम्परीं तु मधुनाऽपि समीप्सितां ताम्।
हंहो विहाय भुवि काञ्चन काञ्चनाढ्य-
वर्णावलीमपि पुरः कथमास्तवीमि॥५॥

आसीच्छ्रीपुरुषोत्तमः स भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रः स्वयं
यत्कारुण्यपयोधिवीचिचयतस्सम्प्राप्य विन्दूनहो।
शुद्धाद्वैतपरम्पराप्रविलसत्सिद्धान्तरत्नावली-
राजद्रश्मिचयाप्लुतं त्रिनयनः सत्सम्प्रदायं व्यधात्॥६॥

शुद्धाभक्तिसमेधमानधिषणासम्भूततत्त्वामृत-
प्रोल्लासाम्बुधिमन्थनोद्भवरसाऽऽसारैकसारव्रतः।
धन्यस्सोऽप्यथ रुद्रदेवमुनिराड् यस्सत्त्वभारोद्भवाद्
अद्यत्वेऽस्य धरातले मधुरिमा जागर्त्यहो विश्वतः॥७॥

एतस्मात् परतो रतोऽत्र सगुणब्रह्मण्यहो दीक्षया
कामं काममसौ विजित्य च पुराराति: पुराऽऽरादहो।
प्रेम्णा श्रीत्रिपुरासुराशनमयं तेने स लीलोत्सवं
सोऽयं श्रीत्रिपुरारिनामत इह ख्यातोऽभवद् भूतले॥८॥

शुद्धाद्वैतपरम्परामणिमहामालासुमेरूल्लसत्-
सद्भाभास्वरसस्वरश्रुतिधनध्यानैकधन्यात्मधीः।
आचार्यस्स्वयमाबभौ निरुपमस्त्रैलोक्यमोक्षव्रतो
विष्णुस्वामिपदाभिधेयमहितस्सिद्धप्रसिद्धार्चितः॥९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

नानादेशाटनपटुतया प्राप्तपर्याप्तविद्यो
विद्वद्व्रातामभसिजपटलीपूर्णसाहस्त्ररश्मिः।
शुद्धाद्वैतामृतरससमास्वाददीक्षैकदक्षो
विष्णुस्वामी भुवि विजयते भक्तमौलिप्रतीक्ष्यः॥१०॥

शास्त्रं किञ्चित् कथमपि जनास्ते पठित्वा कथंचिद्
व्यर्थं वादाहवहवनकुण्डे पतङ्गायमानाः।
धन्योऽसौ शास्त्रगतसरलाख्यानविख्यातमूर्तिः
विष्णुस्वामी विबुधतिलकः तत्त्वसारग्रहीता॥११॥

श्रीविष्णुस्वामिभ्य एभ्यः प्रकामं
पूर्वं यस्तु प्राचलद् भक्तिमार्गः।
श्रीमच्छुद्धाद्वैतवेदान्तदान्तो
यस्मिन्नासीद् वल्लभार्यस्तु पश्चात्॥१२॥

श्रीदेवदर्शन इति प्रथितो धरायां
नाम्ना तु देवमुनिरेष बभूव तस्मात्।
यत्पूर्वपूरुषमहासुकृतेन विष्णु-
स्वामी स्वयं करुणया गुरुरस्य सासीत्॥१३॥

अस्य मुनेस्तु ततः परमासीद्
श्रीपरमानन्दमुनिः शिष्यः।
श्रीमानानन्दमुनिरथासौ
तच्छिष्योऽपि बभूव परस्तात्॥१४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

श्रीमत्प्रकाशमुनिरेष ततो बभूव
सद्भक्तिवारिधिविलीनमणीन्द्रहर्ता।
तस्मात् परं सपदि कृष्णमुनिस्तु योऽभूद्
अन्तर्मुखप्रमुखसात्त्विकतत्त्ववित्तः॥१५॥

अहो शुद्धाद्वैतामृतरससुधापानमधुपो
बभूवासौ पश्चाज्जगति खलु नारायणमुनिः।
पुनश्चायं तस्मादपि खलु परं श्रीजयमुनिः
तथैवायं पश्चादभवदथ स श्रीमुनिरसौ॥१६॥

महाचार्यस्तस्मात्परमथ तदा योऽभवदहो
ततो नित्याचार्यो गुरुचरणनित्यार्चनचणः।
असौ तत्त्वाचार्यो जगदखिलतत्त्वैकमहितो
नृसिंहाचार्योऽभूत्तदनु दनुजव्रातमतिहृत्॥१७॥

ततः शुद्धाचार्यो निखिलजगतीशुद्धगतिकृत्
सुबुद्धाचार्यस्सोऽधिधरणि सुबुद्धव्रतरतः।
प्रबुद्धाचार्यो यो जनगणप्रबुद्धाचरणधी-
रसूयाचार्योऽभूद् ननु जगदसूयाविरहितः॥१८॥

ततो रुद्राचार्यो निजसरणिपूर्वार्यसदृशो-
प्यमुष्माद् यः पश्चात् स खलु भगवन्तार्यपदभृत्।
ततश्चासीदार्यः सपदि ननु रामेश्वरगुरुः
समे शुद्धा भक्तिस्त्रवदमृतधाराप्लुतहृदः॥१९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीमद्ब्रह्मपदयतीश्वरस्तथासौ
चर्याचार्यविलसितस्स हि प्रधानः।
साचार्यः खलु सुदयो दयोत्तमोऽभूद्
श्रीश्रीमद्गुरुपदपद्मषण्डभृङ्गः॥२०॥

श्रीलक्ष्मीनारायणाचार्यवर्यः
यो लक्ष्मीनारायणाङ्घ्रिद्विरेफः।
श्रीविष्णुस्वामीत्यथो राजपूर्वः
विष्णुस्वामी यस्तु साक्षादिवासीत्॥२१॥

अस्मात् परं भुवि बभूव हि सम्प्रदायेऽ
मुस्मिन् मुकुन्दचरणासवपानमत्ते।
श्रीबिल्वमंगल इति प्रथितः पृथिव्यां
भक्तिव्रतव्रजमहाम्बुधिमन्दरश्रीः॥२२॥

अहो अमुष्याञ्च वसुन्धरायां
मुहुर्महाभाग्यपरम्पराश्रीः।
भूयस्तरां सा ह्युदियाय नूनं
श्रीवल्लभाचार्यवरस्ततोऽभूत्॥२३॥

श्रीवल्लभाचार्यमहाशयानां
भक्तिप्रथासाधुकथोत्सवानाम्।
अन्धे शुभाविर्भवनात्तु सद्यः
श्रीबालगोपाल इवाविरासीत्॥२४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पश्चादतो विट्ठलनाथ एष
तस्मात्परं श्रीयदुनाथ आसीत्।
ततोऽभवच्छ्रीमधुसूदनाख्यः
परं ततः श्रीमुरलीधरोऽभूत्॥२५॥

श्रीब्रह्मराजोऽपि बभूव तस्माद्
श्रीपद्मराजस्तु ततस्तदानीम्।
ततस्तु प्रद्युम्नमुनिस्स पश्चाद्
श्रीमान् हृषीकेश इति प्रसिद्धः॥२६॥

श्रीराधिकाकृष्णपदाब्धयुग्म-
मोमुह्यमानभ्रमरायणमाणः।
श्रीवासुदेवो जगदेकदेवो
दिदेव दीव्यद्द्युतिदीपितश्रीः॥२७॥

ततस्तदासीत् परमान्वितस्स
आनन्दनामा यतिराड्वरेण्यः।
कल्याणदासोऽपि मुनिस्ततोऽभूत्
कल्याणकर्ता जगताममीषाम्॥२८॥

श्रीप्रेमजीनामक एष पश्चात्
ततोऽभवत् सौवलदासनामा।
श्रीरत्नदासो यतिरत्नदासः
श्रीकृष्णादासोऽभवदेकदासः॥२९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ततोऽत्र यो राघवदासनामा
धनप्रियाख्योऽपि बभूव दासः।
पश्चाद् दयाराममुनिर्बभूव
श्रीरामदासः खलु रामदासः॥३०॥

ततोऽभवच्छ्रीबलरामदासो
यथार्थतः श्रीबलरामदासः।
सर्वेऽपि सद्भक्तिरसाप्लुतास्ते
राधामुकुन्दाङ्घ्रिनिषेवणाढ्याः॥३१॥

अस्मात् परं सकलभक्तिपयोनिधींस्ता-
नुत्तीर्य सर्वविधभक्तिमथो रसाढ्याम्।
आश्रित्य चाश्रितजनोद्धृतिदक्षपक्षः
श्रीमान् गुरुः परशुराम इति प्रसिद्धः॥३२॥

पश्चात्ततोऽभवदसौ रणछोड़दासः
काश्यामसौ हि मणिकर्णिकतीर्थमध्ये।
वेदध्वनिध्वनितदिग्विदिगन्तरालं
संस्थाथ चाश्रमममुं परितो रराज॥३३॥

तस्मादभूद् मोहनदाससाधुः
मठेश्वरः श्रीमणिकर्णिकायाम्।
तत्रैव तस्मात् परतस्तु भोला-
दासोऽभवत् साधुकदम्बदासः॥३४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ततस्तु दामोदरपादयुग्म-
राजीवराजीवलयान्वितश्रीः।
मठाधिपः श्रीकणिकर्णिकाया-
मभूत्तु दामोदरदासनामा॥३५॥

पेपीयमानानुपमातिहृद्य-
दामोदराङ्घ्र्यम्बुजशीधुसिन्धुः।
रराज दामोदरदाससाधुः
सदैव दामोदरदास्यभास्यः॥३६॥

तस्मात् परं तत्र मठे पवित्रे
नरोत्तमश्रीलनरर्षिदासः।
सर्वाधिनाथः सुकृतैकनाथः
नरोत्तमा यस्य तु दासभूताः॥३७॥

नारायणः कृतयुगे स बभूव पूर्वं
सृष्टिस्थितिप्रलयकार्यविधिं विधित्सुः।
एतत्सखो नरऋषिस्तु नरोत्तमो यः
सासीत् कलौ किल नरोत्तमदास एषः॥३८॥

नारायणः किल पुरा भुवनैकवन्द्यो
द्वैपायनप्रभृतिसर्वमुनीन्द्रमान्यः।
लीलार्थमेव च नरर्षिमसौ चकार
मन्ये स एव हि कलौ पुनराविरासीत्॥३९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दामोदरो ननु गुरुः किल यस्य साक्षाद्
नारायणोऽत्र जगति प्रथयाम्बमूव।
तच्छिष्य एष नितरामथ नूनमेव
सासीद् पुनर्नर ऋषिस्तु नरोत्तमोऽद्य॥४०॥

श्रीमन्नरोत्तममुनेरभवत् परस्ताद्
यः षष्ठपीठपतिरेषहि वर्तमानः।
श्रीमन्महन्त इति सम्प्रतिभाति भूयः
श्रीमण्डलेश्वरयतिर्यमुनाख्यदासः॥४१॥

इति निगदितमेतत् काव्यशैल्या समन्ताद्
जगदभिमतशुद्धाद्वैतवेदान्ततत्त्वम्।
प्रथममथ तु विष्णुस्वामिनाऽनेन पश्चाद्
निगदितमखिलं श्रीवल्लभाचार्यवर्यैः॥४२॥

जयति जगति काशी विश्वनाथान्नपूर्णा-
चरणयुगलपाथोजातकिञ्जल्कमञ्जुवी।
उपतटमथ देव्या विष्णुपद्याः प्रकामं
विलसति सतुआबाबाश्रमो धर्मवर्मा॥४३॥

अनुसुरसरिदेषोऽस्त्याश्रमः सर्वरम्यो
निगमनिनदपूर्णध्वानधन्यो धरायाम्।
सुकृतसमुदयाचारप्रचारप्रवीणः
प्रतिदिवसमथो अन्नप्रदानव्रताढ्यः॥४४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इह हि लसति विष्णुस्वामिनां सम्प्रदायो
गुरुरथ यमुनादासाख्यसिद्धो वरेण्यः।
अनुदिनमथ विद्वच्छात्ररक्षाविधानं
भवति सततमेवं सत्यधर्मप्रभावात्॥४५॥

अथ च सुरसरित्तीरस्य दिश्याममुष्या-
मरममरलोकद्वाररम्यं चकास्ति।
पुनरपि च तथा श्रीसंकटापार्श्वभागा-
दुभयत इह मार्गो मार्गणीयो मनोज्ञः॥४६॥

विलसति किल रम्यो हन्त विद्यालयोऽसौ
शतमथ वटवस्ते यत्र कामं पठन्ति।
अशनवसनवासग्रन्थशय्याचिकित्सा-
प्रभृतिविषयवृन्दान्याश्रितान्याश्रमेण॥४७॥

समयत इह सर्वे साधवः संत्त्वशीलाः
प्रतिदिवसमथायान्ति प्रकामं प्रसन्नाः।
सततमपि च तेषां भोजनाच्छादनादि
क्रियत उत समन्ताच्छ्रीमहन्तप्रसादात्॥४८॥

प्राप्तं गोकुलमण्डलाद् रसमहामण्डैकभाण्डं महद्
भक्ताऽऽखण्डलमण्डलश्रितसिताश्रीखण्डखण्डाधिकम्।
अद्यत्वेऽपि सुरापगापरिसरत्सत्प्राङ्गणालिङ्गितं
काश्यां श्रीमणिकर्णिकापरिसरे सर्वं तदाराजते॥४९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोपीनाथपदारविन्दमधुपो योऽयं मनुस्तन्महा
काव्ये वैष्णववैभवे निरगमत् सर्गस्तु षष्ठोऽधुना।
आदि-स्थानिवदर्थवत्त्व-वचनेझल्येत्-प्रयागप्रभा-
विद्वद्वैभव-पाकशासनपराक्रान्तिप्रथासोदरः॥५०॥

॥ इति श्रीमत्सकलसतीशिरोमणिमालारत्नावलीसंस्फुरन्मयूख-च्छटातिशायिनखचन्द्रज्योत्स्नावलयवीणापाणिदेवी-श्रीमत्कृष्ण-द्वैपायनकृपाकटाक्षसमासादितव्यासकूटतत्त्वार्थपीयूषपण्डितश्रीपशुपति भट्टाचार्यसुतमनुदेवभट्टाचार्यव्याकरणाचार्यव्याकरणकेशरिशास्त्र-भूषणशास्त्रार्थमहारथविरचिते वैष्णववैभवे महाकाव्ये षष्ठः सर्गः॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥श्रीः॥

वैष्णववैभवम् महाकाव्यम्

॥ सप्तमः सर्गः॥

अहो अवाप्तुं जनुषः फलं तद्
बुधास्तु कर्णाञ्जलिभिः पिबध्वम्।
सम्पूर्णमादेः सतुआख्यबाबा-
साधोश्चमत्कारमयं चरित्रम्॥१॥

पूर्वन्तु वर्षेभ्य इहैव पञ्च-
त्रिंशत्समाढ्यद्विशतात्मकेभ्यः।
बभूव सादिः सतुआख्यबाबा
यो योगविज्ञानपरीतमूर्तिः॥२॥

यो गुर्जराख्ये विमलप्रदेशे
श्रीपालिताणाभिधराज्यमध्ये।
ग्रामे तदानीं रतने पुरेऽस्मिन्
लेभे जनिं तातकुलाब्धिचन्द्रः॥३॥

जेठापटेलोऽभवदस्य नाम
यश्शूरसेनाख्यमहीपतेस्तु।
गत्वा प्रतिग्राममसौ तदानीं
करग्रहेष्वेष बभौ प्रधानः॥४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हा हन्त, दौर्भाग्यकशावशात्तु
सासीदनावृष्टिरतीवघोरा।
तथापि भागग्रहणाय राज्ञा
प्रचोदितोऽयं विमना बभूव॥५॥

जेठापटेलो विनतस्तदानीं
करग्रहादेशविमोचनाय।
श्रीशूरसेनं नृपतिं तु नीत्या
स प्रार्थयामास पुनः पुनस्तु॥६॥

स शूरसेनोऽधिप उग्रचेता
मनाङ् न मेने वचनं तदीयम्।
तमोरजोनष्टमतेर्हि नूनं
सुखाय न स्यादुपदेशवाक्यम् ॥७॥

जेठापटेलोऽपि मुहुर्विनिन्द्य
राजानमारात्समुवाच वाचम्।
अन्नं न भोक्तुं सलिलं न पातुं
प्रजाजनस्यास्ति कुतः करस्ते?॥८॥

जेठापटेलस्य निशम्य भावं
महाजनः सोऽनुजगाम सद्यः।
तमेव तृट्क्षामविदीर्णदेहः
वत्सो यथाऽसौ पितरं स्वभावात्॥९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizaqtion by eGangotri

अशोषरोषाऽभिनिवेशवश्यः
जेठापटेलोक्तपथानुगामी।
प्रजाजनोऽसौ सकलोऽपि सद्योऽ-
भ्यषेणयद् निर्भय एव सज्जः ॥१०॥

श्रुत्वाऽखिलं सम्प्रति शूरसेनः
समादिशद् विप्रतिपन्नबुद्धिः।
जेठापटेलं तरसा निगृह्य
मध्येसभं चानयनाय सद्यः॥११॥

जेठापटेलो निगृहीत एव
बभूव सद्यो नृपशासनेन।
आनीत एष प्रसभं सभायां
प्रजाजनक्षेमविचारचारुः॥१२॥

स लाञ्छितोऽभूत्तु तदैव दैव-
प्रकोपकालुष्यविभिन्नमर्मा।
राज्ञः समक्षं समधीस्तु देश-
द्रोहाभियोगेन दुरावृतोऽपि॥१३॥

विशुद्धबुद्धिर्नृपकोपवह्नि-
दन्दह्यमानामलचित्तसद्मा।
जेठापटेलस्तु नृपाज्ञयैव
निष्कासितोऽभूद् निजदेशतस्तु॥१४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जेठापटेलोऽपि निशङ्कचेता
राज्ञः पुरस्तात् स उवाच वाचम्।
प्रभोः पदाम्भोजयुगव्रतस्य
भक्तस्य भीतिः प्रभवेत् कुतश्चित्?॥१५॥

श्रृणुष्व राजन्, वचनं मदुक्तं
राज्यं लघिष्ठं भवदीयमेतत्।
सत्यं वचो मे भविता कदाचि-
दहं शरण्यः शरणागतस्त्वम् ॥१६॥

नैवागमिष्यामि पुनः कदाचिद्
राज्यं त्वदीयं जनकष्टमूलम्।
इत्येवमुक्त्वा पुरतः समेषां
जेठापटेलो धुरि निर्ययौ सः॥१७॥

स राजगेहात्तरसा निवृत्त्य
समस्तलोकेश्वरपच्छरण्यः।
यष्टिं समादाय च दायभूता-
मेकां जगत् पर्यटितुं प्रवृत्तः॥१८॥

विभ्रम्य भूयो भुवनं समन्ताद्
अतीत्य मासान् कतिचित् कथञ्चित्।
प्रयागराजं समवापि पुण्यैः
श्रीमत्त्रिवेणीसलिलाभिरामम् ॥१९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizaqtion by eGangotri

तत्रैव संयोगवशात्तु कश्चित्
सिद्धस्तु योगी स महानिहासीत्।
नाम्नाऽभवद् यः किल पर्शुराम-
दासः प्रियो हन्त सदा प्रभोर्यः॥२०॥

सान्निध्यसान्निध्यसुधासमुद्र-
मुन्निद्र एषोऽधिगतः समन्तात्।
तदीयपादाम्बुजमाप्तमाप्तं
विज्ञाय शिष्यत्वमुरीचकार॥२१॥

अनेकजन्मार्जितभाग्यभाग्यः
तदैव दैवस्य कृपाऽभिषिक्तः।
साफल्यसौफल्यसमर्प्यमाण-
समस्तपुण्यप्रचयाभिरामः॥२२॥

स त्वस्य सत्त्वस्य कृपानिधानं
महोमहोत्साहसमृद्धिबुद्धिः
सदीक्षितोऽभूद् रणछोड़ादास-
नाम्ना सनाऽऽम्नायमताभिरूपः॥२३॥

योगप्रयोगप्रणिधानहेतोः
प्रयागतीर्थादपि यागरूपात्।
काशीमुपेत्य द्वयबोधनाशी-
मासीत्तदा जाह्नवितीरवासी॥२४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रिङ्गत्समुत्तुङ्गतरङ्गरङ्ग-
भङ्गप्रसङ्गाद्भुतवैभवाढ्या।
गङ्गाऽङ्गनाऽपाङ्गशुभाङ्गसङ्ग-
सन्मङ्गलेयं भुवि भाति काशी॥२५॥

श्रीपर्शुरामाख्यगुरोर्निदेशाद्
विनिश्चिकाय ध्रुवतत्त्वहेतोः।
स्थातुं तदा श्रीमणिकर्णिकाख्यं
श्रीचक्रतीर्थास्पदमाप्रणम्यम् ॥२६॥

पुरा पुरारातिकृपाप्तिहेतो-
र्विष्णुः कदाचित्तप आचचार।
सुदर्शनेन प्रनिखाय भूमिं
चक्राभिधां पुष्करिणीं ततान ॥२७॥

तपः समालोक्य तदीयमेष
शम्भुः सदानन्दवनाधिनाथः।
प्रकम्पयामास शिरस्तु हर्ष-
वर्षातिरेकात्तु मुहुर्मुहुर्यः॥२८॥

गङ्गासमुत्तुङ्गतरङ्गभङ्ग
शेषाहिफूत्कारमणिप्रभाढ्यम्।
कृपाकपोलानलनालमालं
भालं तदीयं बहुधा चकम्पे ॥२९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

महातस्यावलिलीलयाऽलं
विभूषितं विष्णुमथो विलोक्य।
अहो चमत्कार इदं विमृश्य
शिरो धुनोति स्म शिवः प्रसन्नः॥३०॥

श्रीकर्णिकाभावितकुण्डलीन्द्र-
शिरःप्रदेशात्तु मणिः पपात।
ततः प्रभृत्येव तदा तदासीत्
स्थानं पवित्रं मणिकर्णिकाख्यम् ॥३१॥

शिष्यं तदा श्रीमणिकणिकाख्य-
तीर्थप्रतिष्ठं स विलोक्य हृष्टः।
श्रीपर्शुरामाख्यगुरुस्ततस्तु
स्थानं ययौ स्वं त्रिहुटाभिधेयम् ॥३२॥

प्रातस्तरां श्रीरणछोड़दासः
शय्यां विहायैव कृताभिषेकः।
गङ्गासमुत्सङ्गकृताधिवासः
स्वासाधनाध्यानधनो बभूव॥३३॥

यः प्रत्यहं सद्‌गृहपञ्चकेभ्यो
भिक्षां समादाय च रोटिकां ताम्।
गाङ्गं समापीय पयोऽमृतौघं
काशीनिवासैकमना स आसीत्॥३४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सत्साधनावृद्धमहाप्रभावं
श्रद्धाधनो हन्त महाजनो हि।
मुद्रास्तु काश्चिद् निजभक्तितस्तु
समर्पयामास मुदा तदानीम् ॥३५॥

स सञ्चयं दुश्चयमेव मत्त्वा
भिक्षुभ्य एभ्यः प्रददौ समस्तम्।
पुरा तृणीकृत्य समागतस्य
मन्त्रित्वमेतस्य कुतोऽभिलाषः?॥३६॥

स एकदा हन्त विलोक्य चोनं
द्रव्यं ह्यनल्पा अपि भिक्षवस्ते।
न लेभिरे सर्व इदं विचिन्त्य
मुमोह मोहप्रभुरापरार्थ्यम् ॥३७॥

विनिश्चिकायैष ततः परन्तु
विहाय मुद्रां चणकान् प्रदास्ये।
भृष्टानहं चेति विचार्य सद्यः
ततः प्रभृत्येष तथा चकार॥३८॥

तदा प्रभृत्येव ततः परन्तु
स प्रत्यहं श्रीमणिकर्णिकायाम्।
भृष्टान् गुडाढ्याञ्चणकान् समन्ताद्
वितीर्णवाञ्छ्रीरणछोड़दासः॥३९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इत्थं कुर्वन् प्रतिदिनमहो चक्रतीर्थप्रदेशे
सिद्धो योगी स किल रणछोड़ाख्यदासस्तपस्वी।
भूयो भूयो सगुडचणकान् सर्वभिक्षुभ्य एभ्यः
सर्वत्यागी स्म वितरति भक्तिप्लुतस्वान्तशान्तः॥४०॥

तत्राश्चर्यं सुमहदभवत्तत्तु तस्यैव युक्तं
श्रीमद्विश्वेश्वरचरणपाथोजकारुण्यपूर्णम्।
एकस्मिंस्तत्र किल दिवसे सागतः कश्चिदासीत्
भिक्षुः बृद्धो विगलितसमाङ्गास्थिराशिप्रपञ्चः॥४१॥

शरीरं दीर्घं यस्य लसति ललाटे द्युतिरहो
तथा वाण्यामोजोऽप्यतिविमलगात्रो विपुलभः।
गृहीत्वाऽसौ यष्टिं परिलसितमुष्टिं ननु शनैः
समायातः कश्चिद् निरतिशयकम्पोऽस्य पुरतः॥४२॥

आगत्य सोऽवददहो ननु भोजनाय
भिक्षां प्रदेहि तु बुभुक्षित एव चास्मि।
आसीत्तदा ह्यनुगतो रणछोड़दास-
शिष्यो गुरुं सपदि मोहनदासनामा॥४३॥

तञ्चादिशत् किमपि भोजनमस्ति कच्चित्
सोऽयञ्जगौ हि चणकाः कतिचिद्विभान्ति।
तानेव देहि वचनं गदतेऽत्र तस्मै
तूर्णं ददावतिथिसञ्चयवत्सलश्रीः॥४४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भिक्षुर्ददर्श चणकान् कठिनान् समस्तान्
दुःखादुवाच दशनं न मदीयमस्ति।
कौतस्कुतं सपदि चर्वणमस्ति शक्यं
कर्तुं परन्तु मम बृद्धिमिता बुभुक्षा॥४५॥

बुभुक्षापरीतस्तथा चर्वणं तद्
विधातुं मदीयो न चैकोऽस्ति दन्तः।
निशम्येरितं भिक्षुवाक्यं तदानीं
समस्यासुमस्याविलं चेत आसीत् ॥४६॥

पेषं पेषं सकलचणकान् भिक्षवेऽस्मै प्रदेहि
श्रुत्वा वाक्यं गुरुनिगदितं मोहनाख्यस्तु शिष्यः।
तूर्णं न्यस्योपलयुगलमध्येऽथ पिष्ट्वा समस्तान्
भक्तिश्रद्धाभरहृदयतश्चूर्णमस्मै ददौ सः॥४७॥

सद्योऽत्र भृष्टचणकान् मुदितो विलोक्य
सक्तूनमून् विदशनैरपि सेवनार्हान्।
प्रेम्णा जगाद स तदाऽहममुं हि गत्वा
भूयोऽनुगङ्गमथ सम्प्रति भक्षयामि॥४८॥

अथ जिगमिषुरेष प्राह भिक्षूत्तमोऽसौ
प्रतिदिवसमिहैवं सस्मितास्याम्बुजश्रीः।
वितर च तरसा त्वं सक्तुमत्तुं समेभ्यः
तत इह नियमोऽयं सञ्चलत्यद्य यावत् ॥४९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विष्णुस्वामिसुदर्शनोद्‌गतमिदं श्रीचक्रतीर्थं महत्
तत्पार्श्वे मणिकर्णिका विजयते मुक्तिर्हि यत्किङ्करी।
आराच्छ्रीरणछोड़दासयतिराट्संस्थापितोऽयं पुरा
भात्येवात्र मठोत्तमस्तु सतुआबाबाश्रमोऽसौ महान्॥५०॥

गोपीनाथपदारविन्दमधुपो योऽयं मनुस्तन्महा-
काव्ये वैष्णववैभवे निरगमत् सर्गोऽधुना सप्तमः।
पातिव्रत्यजयादुदात्तबलितो विद्वद्विनोदादपि
पाश्चात्त्योऽयमहो पुनश्च सुषमासारस्वतीसोदरः॥५१॥

॥ इति श्रीसकलसतीशिरोरत्नवीणापणिपदेवी-सकलसुधी-
शिरोरत्नपण्डितश्रीश्रीपशुपतिभट्टाचार्यकनिष्ठसुतमनुदेवभट्टाचार्य-
विरचिते वैष्णववैभवे महाकाव्ये सप्तमः सर्गः॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥श्रीः॥

वैष्णववैभवम् महाकाव्यम्

॥ अष्टमः सर्गः॥

वितर सक्तुमहो प्रतिवासरं
सपदि भिक्षुवचो हि निशम्य तत्।
स रणछोड़मुनिस्तु ततः परं
नहि ददर्श तु भिक्षुममुं पुरः॥१॥

अभवदस्य वपुस्तु ततः परं
पुलकिताञ्चितरोममयामृतम्।
अमनुतायमहो प्रभुरेव मे
विधृतभिक्षुतनुस्स्वयमाययौ॥२॥

ननु रुरोद मुहुर्मुहुरेव स
प्रभुरयं पुरतो मम सम्प्रति।
सपदि भिक्षुतनुः समुपागतः
परिचितो न मया च्छलिनां वरः॥३॥

विमलपादपयोजरजोऽरजः
शिरसि हन्त मया धृतमेव नो।
तदवनेजनवारिसुधामिमा-
मपिबमेवमहं भुषितोऽभवम्॥४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इति विचिन्त्य पुनः पुनरेव हा,
स रणछोड़मुनिर्भगवद्व्रतः।
सुपुलकाञ्चितसञ्चितविग्रहः
प्रतिदिशं ह्यवलोकयितुं रतः॥५॥

अहह, हन्त ममैवमभाग्यतः
करुणयाऽरुणया परिलिङ्गितः।
मम पुरः समुपागत एषकः
परिचितो न मया च्छलपण्डितः॥६॥

इति तदीयहृदः खलु सात्त्विकं
सपदि भावमहोर्मिमवेक्ष्य सः।
त्रिजगतीपतिरेष उपागमद्
ननु पुरो निजभक्तमनोगतः॥७॥

ध्रुवमनन्यनिजव्रतभक्तितो
भवति यः परवान् जगदीश्वरः।
स निजलोकमपास्य झटित्यहो
लसति भक्तपुरो गतवाहनः॥८॥

इति तदैव विहाय तदीशतां
स रणछोड़मुनेः पुरतोऽभवत्।
अथ विलोक्य प्रभुं निजसन्निधौ
यतिवरः प्रणनाम च भक्तितः॥९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

प्रभुरुवाच मुनिं स कृपामयः
त्वमिह तत् कुरु सत्तुकवण्टनम्।
प्रतिदिनं तदिहैव तु भिक्षवे
तव च नाम तथैव भविष्यति॥१०॥

स भगवद्वचनामृतदीक्षितोऽ
भवदहो कृतकृत्य इहोत्तमः।
भुवि ततः प्रभृति प्रथयाऽन्वितः
विमलसत्तुकबण्टनरूपया॥११॥

अथ बहोः समयात्तत्तु परं कदा-
चिदपि कालवशादवनीतले।
ननु विधुग्रहणं समुपागतं
शुभवगाहनपुण्यचयाप्तुतम्॥१२॥

जनचयस्तु तदा समुपागतोऽ-
थ मणिकर्णिकया महितं तटम्।
ननु वगाहननिश्चयमानसः
नरपतिः खलु सोऽप्यनुसङ्गतः॥१३॥

अथ सुयोगवशादवनीपतिः
स रणछोड़महाश्रममाययौ।
कृतवगाहन एष ददर्श तं
ननु समाधिगतं च यतीश्वरम्॥१४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

स तु मुनिर्जगदीश्वरदर्शनात्
परमहो स्वमहोविजितेन्द्रियः।
अचलभक्तिविलीनसमाधिभाक्
स्म भवतीह सदैव निरन्तरम्॥१५॥

इह तु शिष्यवरः किल मोहनः
स्म विदधाति च सक्तुकवण्टनम्।
कृतवगाहन एष नरेश्वरः
वसनधारणकर्म तदाकरोत्॥१६॥

परमथ ग्रहणस्नपनोत्सुको
बहिरभूत् स मुनिस्तु समाधितः।
सुरसरित्तटमागत एव यो
नृपतिना समदर्शि तदा हठात्॥१७॥

स खलु दिव्यतपोऽमितभास्वरो
निखिलपुण्यपयोजदिवाकरः।
गिरिसुताविषमेक्षणभक्तिधी-
स्त्रिपथगातटभूमिमुपाययौ॥१८॥

नरपतिः सहसा समुपेत्य तं
ननु ननाम तदीयपदाम्बुजम्।
यतिपतिः प्रतिनाम समाश्रितः
कुशलमङ्गलमेष च पृष्टवान्॥१९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

समवलोक्य ततस्तु नरेश्वरः
सकलनामपरिग्रहणक्रियाम्।
सपदि विस्मित एव तदाह्यसा-
वतिविनीत इदं ननु पृष्टवान्॥२०॥

अपि भवानखिलान् हि कथं कथं
मम जनान् समया किल वेत्त्यहो।
स तमुवाच तदा धरणीपते
अहमहो भवतोऽस्मि महन्, प्रजा॥२१॥

स्मरसि किं बहुवर्षममूद् गतं
बहिरकारयदेष भवान् प्रभुः।
अहह तन्निजराज्यत एव मा-
मयमहं स पटेल इह स्वयम्॥२२॥

यदि पुरा भवता निजराष्ट्रतो
मम बहिष्करणं विहितं न चेद्।
अविहितञ्च हितञ्च ममाप्यहो
गिरिजया सहितेन शिवेन तत्॥२३॥

नरपतिस्तु तदा महिषीयुतः
यतिपतेश्चरणाम्बुजमादधौ
मुनिमुवाच नृपः प्रथमं मम-
स्खलनमेतदिदं परिमृष्यताम्॥२४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

असकृदेव नरेश्वर एषकः
चरणयोः प्रणिपत्य क्षमां ययौ।
स रणछोड़मुनिः करुणार्णवः
नृपममुं क्षमया समतोषयत्॥२५॥

मरकतोत्तमरत्नमहोमयं
निजगलस्थितहारमथ स्वयम्।
गुणमयी रमणी तु तदा मुने-
श्चरणपङ्कजयोस्तरसा ददौ॥२६॥

'मम गुरो, परिवारसमुद्भवा
यदपराधसहस्रततिः क्वचित्।
स्वकरुणामृतसिन्धुतरङ्गतोऽ-
त्रभवता भवता धुरि मार्ज्यताम्॥२७॥

इति निशम्य शुभं वचनं तदाऽ-
तिशयदैन्यपरीतमसौ पुनः।
मुनिजनोचिततत्क्षमयाऽन्वितं
तमुभयं तरसा मनसाऽकरोत्॥२८॥

सम्प्रार्थितो हि गमनाय मुहुस्ततस्तु
राज्ञ्या तयाऽपि किल तत्पलिताणराज्यम्।
हारं पुरः प्रतिपदौ समुवाच वाचं
श्रीविश्वनाथचरणाद् न बहिर्व्रजामि॥२९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हारप्रतिग्रहणमस्ति तु नोचितं तद्
मत्त्वाऽथ मन्त्रिनिचयैः परिमृश्य भूयः।
विक्रीय तत् स्वगुरुकीर्तिमहापताकां
संस्थापयिष्य इति सम्प्रति निश्चिकाय॥३०॥

जातं तदेव ननु काशिमहापणेऽस्मिन्
विक्रीय हारमथ तस्य च मूल्यतस्तु।
क्रीता मही भवनमन्दिरयुक् च सप्त-
त्रिंशत्सहस्त्रमितरूप्यकतस्तदैव॥३१॥

हंहो तदाऽधिमणिकर्णिकमेव तूर्णं
देवापगाप्रयतवारिसमाप्लुतं तत्।
सद्यस्तरां समभवत् सतुआख्यबाबा-
रम्याश्रमास्पदमिदं विपुलं तटं तत्॥३२॥

क्रीत्वा समस्तमपि तद् नृपतिस्तदा द्वा-
त्रिंशत्सहस्त्रमितरूप्यकराजिमूल्यैः।
दत्त्वाऽखिलं तु रणछोड़मुनीश्वराय
तृप्तो नृपः समगमत् पलिताणराज्यम्॥३३॥

तत्रावदद् निखिलवृत्तमसौ नरेन्द्रः
तत्तत्प्रदेशनृपतीन् निजबन्धुवर्गान्।
तेऽपि स्वयं क्रमवशाद् शनकैस्तु सर्वे
काशीमुपेत्य ददृशू रणछोड़दासम्॥३४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अत्रान्तरे समभवद् घटना तदैका
काश्यां मुदा ह्यघटनाघटनप्रभोस्तु।
लीलास्पदं सकलभक्तवरैः समन्तात्
कर्णाञ्जलिद्वयभरै परिपेयमेव॥३५॥

काश्यां ठठेरिविपणौ वसति स्म कश्चिद्
भक्तोत्तमस्तु पुरुषोत्तमदासनामा।
यो ह्यग्रवालकुलजो नवयौवनश्रीः
सद्यस्तरां कृतविवाहविधिः प्रसन्नः॥३६॥

हा हन्त हन्त, कृतकर्मवशाद्विचित्रं
दुखास्पदं सपदि जातमथो तदानीम्।
अत्याहितं तु पुरुषोत्तमदास एष
दुर्भाग्यतो ह्युपरराम पुरः समेपाम्॥३७॥

सौभाग्यमङ्गलसमेधितगौरवश्रीः
साधव्यसाधुविधिसाधितदिव्यलोका।
नित्यव्रतोत्सवमयी गृहिणी तदीया
हंहो सतीयितुमसावुपचक्रमेऽत्र॥३८॥

निर्णीय चैवमपि सा दृढनिश्चयश्रीः
प्राप्तुं सतीत्वममरालयतो वरिष्ठम्।
शृङ्गारराजिपरिराजितदिव्यमूर्तिः
काशीश्मशानमगमन्मणिकर्णिकाख्यम्॥३९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संयोगतः किल मुनी रणछोड़दासः
स व्युत्थितोऽत्र समभूत् स्वसमाधितस्तु।
श्रीविश्वनाथपदपद्मपरागराग-
संलीनचित्तमधुप स्थितधीर्यतीन्द्रः॥४०॥

सुश्राव यो यतिपतिस्सहसैव हन्त
भूयस्तरां करुणरोदनचीत्कृतानि।
पप्रच्छ ताश्च जनताः करुणार्द्रचित्तः
किं वा कथं कुत इदं प्रभुवाञ्छयैव॥४१॥

तत्राब्रवीत्तु समुपागतमानवौघः
सद्यस्तरां प्रणतिपूर्वकमेव चार्दाः।
उद्यत्तपोविसरमण्डलमण्डितं तं
योगप्रभावलयितं रणछोड़दासम्॥४२॥

स्वामिन् मुनीन्द्र भगवन् जगतीशपाद-
पद्मप्रभावलवशोषितलोकपाप्मन्।
एषाऽधुना नववधूः पतिलीनचित्ता
पत्यौ मृते धुरि सतीत्वमुरीकरोति॥४३॥

विद्वन्नये यतिपते तव पादपद्मे
भूयःप्रणत्य विनिवेदनमस्तु मस्तु।
विद्वन्नयेऽत्र समुपाचरितं समस्तं
किं स्यात् प्रभो वद तदीयकुलाभिबृद्ध्यै?॥४४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

श्रुत्वाऽखिलं ननु ततो रणछोड़दासो
गम्भीरचिन्तनचिरस्थितनेत्रपक्ष्मा।
कन्या सतीत्वविधये विहिता वदान्याऽ
नन्या न सौभगधना जगतीषु धन्या॥४५॥

गच्छन्तु त्वरया श्मशानमपि तद् दुर्गाशिवाङ्घ्र्यम्बुज-
द्वन्द्वं द्वन्द्वविनाशकं श्रुतिशिखातत्त्वैकलीलास्पदम्।
अन्त्येष्टिं कुरुतापि नो सपदि तद्बालस्य तस्यानुगा
आयामि स्वयमेव तस्य निकटे यत्साम्प्रतं साम्प्रतम्॥४६॥

इत्युक्त्वा रणछोड़दासयतिराट् गत्वा समाधिस्थलं
किञ्चित्कालमथोपविश्य निभृतं ध्यात्वा क्षणं स्वेश्वरम्।
दृष्ट्वा जीवगतिं विमृश्य निखिलं विश्वेश्वरस्याज्ञया
नीत्वा स्वस्य कमण्डलुं स तरसा यातश्श्मशानस्थलम्॥४७॥

आहो, तत्र महाचितोपरिगतं बालं नवीनं तदा
ध्यात्वा श्रीगिरिजागिरीशचरणद्वन्द्वाम्बुजं सुन्दरम्।
दृष्ट्वा सोऽपि चितामिमामनुपमां भूयः परिक्रम्य ता-
मादाय स्वकमण्डलोस्तु सलिलं सद्यः सिषेच स्वयम्॥४८॥

अहो आहो हंहो किमुत परितो वाऽप्युपरितः
ततश्चातश्चातस्तदनु मनुजान्तःकरणतः।
तथाचेतश्चेतः प्रभवति सचेतःप्रकृतितः
महाश्चर्यं नम्यं ननु जगदगम्यं स्म भवति॥४९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

असौ बालो लोलो वरयुगकपोलो ननु पुरः
समेषामेषां तत्क्षण इह महेशानुकृपया।
महाशय्यामध्यादुदित इह स ध्यानमनुतो
प्रभावादेवादेः सपदि सतुआख्यस्य सुयतेः॥५०॥

चितामध्ये सद्यः शिशुरयमहो सर्वजनता-
पुरस्तादेवासौ वदति वचनं चोत्तरयति।
पिता दृष्ट्वा पुत्रं सपदि पुनरङ्कागतमहो
ननामायं नाम्ना स इह रणछोड़ं यतिपतिम्॥५१॥

इत्थं श्रीकविराजपादकमलद्वन्द्वद्विरेफोपमो
योऽयं श्रीमनुदेव एष च पुनस्तस्य प्रबन्धेऽष्टमः।
सर्गो वैष्णववैभवे निरगमद् शृङ्गारशृङ्गाटक-
भ्राता सैष सहोदरःपुनरहो विद्वद्विनोदानुजः॥५२॥

॥इति सकलसतीशिरोमणिरत्नवीणापाणिदेवी-निखिलतन्त्रा-परतन्त्रपण्डितेन्दुपशुपतिमहाचार्यकनिष्ठसुतमनुदेवभट्टाचार्य-कृते वैष्णववैभवे महाकाव्येऽष्टमः सर्गः॥

●

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥श्रीः॥

वैष्णववैभवम् महाकाव्यम्

॥ नवमः सर्गः॥

जयतु-जयतु-नादः प्रासरत्तत्र जातं
महदतिमहदत्याश्चर्यभूतं नभूतम्।
स किल समुपसृत्य प्राप्तभूमप्रसादः
विनयविनतमूर्ध्ना योगिवर्यं ननाम॥१॥

सपदि स तु चितातस्तूर्णमेत्य प्रसन्नः
यतिवरकरपाथोजद्वयस्पर्शधन्यः।
पितरमपि च पश्चात्तं प्रणत्याप्यथाऽख्या-
नधिमहि भगवत्कारुण्यपूर्णो बभूव॥२॥

समुपगतकृपातस्तस्य शिष्यत्वमारा-
दलभत रणछोड़ाख्यस्य दासस्य तत्र।
गृहमपि सतुआबाबाख्यया सुप्रसिद्धं
तदकृत यदिदानीं यावदस्तीह काश्याम्॥३॥

अपि सपदि तदानीं तत्र किञ्चिल्लिखित्वा
तदथ मुनिवरोऽदात्तत्र तस्मै प्रमोदात्।
इदमपि मम चिह्नं यावदस्ति त्वदीये
गृह इह नहि बाधा काऽपि कुत्रापि सा स्यात्॥४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

कथमपि नहि तत्राकालमृत्युर्भवेत्तु
ध्रुवमिति पुरुषाणामुत्तमं दासरत्नम्।
सपदि गदितवान् कारुण्यपूर्णेक्षणश्री-
रिति गुरुरणछोड़ाख्यस्तदानीं प्रसन्नः॥५॥

अद्यापि हन्त सुमतेः पुरुषोत्तमाख्य-
दासस्य तस्य भवने लिखितं तदस्ति।
मृत्युञ्जयप्रतिमसद्गुरुपत्कृपातो
मृत्युञ्जयोऽभवदसौ पुरुषोत्तमोऽत्र॥६॥

अथ जगाम शनैस्समयो महान्
स रणछोड़महत्त्वविवर्धकः।
भगवदीप्सिततत्त्वविधायकः
भुवि महामहिमावलिमण्डितः॥७॥

श्रीगुर्जराभिधमहीवलये मनोज्ञे
योऽसौ हि भावनगराभिधमण्डलेऽस्मिन्।
पूर्वं प्रभुस्तु रणछोड़मुनेर्हि पालि-
ताणाख्यराज्यनृपतिस्स पुनः कदाचित्॥८॥

बहोः कालात् पश्चादथ परिकरैस्तैश्च सकलै-
स्सहैवासौ राजा निरतिशयभक्त्याप्लुतमतिः।
सपत्नीकस्सोऽयं सपदि समुपागत्य च गुरुं
मुहुर्नामं नामं स्म भवति च धन्योऽधिधरणि॥९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

अनेके राजानस्सपदि सह तेनैव निखिला
अभूवंस्ते सर्वे स्वगुरुरणछोड़ाख्यसुयतेः।
मुहुश्श्रीपादाम्भोरुहयुगलभृङ्गोपमधियः
प्रणेमूरुपन्तं तदनु कृतकृत्यास्समभवन्॥१०॥

तदैवान्नक्षेत्रव्रतरतधियस्ते नृपतयः
तथा च्छात्रावासप्रभृतिनिलयांस्तानपि मुदा।
सदा पूजापाठप्रचयपरिचर्यादिकमपि
महाभक्तिश्रद्धाप्रथितमतयस्तेऽप्यकृषत॥११॥

इति सकलविधीनां शास्त्रविध्यादृताना-
मपरिमितविधावावश्यकं द्रव्यजातम्।
सकलमपि यथाभक्त्येव सर्वैर्नरेन्द्रै-
रहमहमिकया संस्थापितं धर्महेतोः॥१२॥

चलमिदमचलं वा स्थावरं वा समन्तात्
पणमयमपणं रत्नादिधात्वादिरूपम्।
भवनमतिविशालं विस्तृतं भूमिरूपं
निखिलमपि नरेन्द्रैस्सुव्यवस्थापितं तैः॥१३॥

अपि च मनसि तेषां भूपतीनाममीषां
मनसि समुदियाय श्रद्धया दत्तमेतत्।
सुरसरिति महापुण्यामृताम्भःप्रवाहो
यदवधि भवति स्यात्तावदेतत्समस्तम्॥१४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एतत्कृते क्वचिदहो न कदापि काचिद्
याच्ञा कथञ्चिदपि साऽपि कुतोऽपि कार्या।
मत्त्वैव ते नृपतयो गुरुभक्तिशीलाः
तच्चैरकालिकधनप्रणिधिं हि चक्रुः॥१५॥

भूमेस्तथैव भवनाद्विपणेस्समस्ता-
दायो भविष्यति महान् प्रतिवत्सरं यः।
तेनैव साम्प्रतमथास्य सदाश्रमस्य
सर्वो व्ययोऽपि तरसा भुवि सेत्स्यतीह॥१६॥

श्रीमान्यभावनगरस्थितपालिताणा-
राज्येश्वरो नरपतिर्ननु शूरसेनः।
एवञ्च तस्य महिषी ह्युभये मिलित्वा
गुर्वाश्रमोचितविधीन् रचयाम्बभूवुः॥१७॥

राज्ञी पुनर्विपुलरूप्यकरत्नचक्रं
कोषे तु 'राजकुलजैरपि नो कदाचित्।
निष्काश्यमेतदिति' तत्र निधाय तूर्णं
सर्वं तदाश्रमकृते लिखितं चकार॥१८॥

तद्वृद्धिराशिवशतः प्रतिवत्सरं तु
सर्वाऽपि धार्मिकगतिः परिपाल्यतेऽत्र।
देवार्चनाऽतिथिगणाशनयज्ञपूजा-
विद्यार्थिपाठवसनप्रभृतिव्यवस्था॥१९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizaction by eGangotri

तत्रैकदा ननु हठात् सतुआख्याबाबा-
शब्दाभिधानमहितो रणछोड़दासः।
भक्त्याऽनुगङ्गमगमत् स्वभिषेकहेतोः
निर्विण्णमत्र खलु कञ्चिदसौ ददर्श॥२०॥

रोरुद्यमानमथ तञ्च तदाऽत्र दृष्ट्वा
पप्रच्छ खिन्नहृदयः किमु रोदिषि त्वम्?।
ऊचे स भावनगरादहमागतोऽस्मि
काश्यां ममात्र खलु चोरितमस्ति सर्वम्॥२१॥

नास्त्यत्र मे परिचितः कतमोऽप्यथो हा
देशं च मे ननु कथं प्रतियामि हन्त?।
एतत्तु मेऽस्ति ननु रोदनकारणं तद्
हा हा विधेर्गतविधेश्चरितं विचित्रम्॥२२॥

हन्तात्र भावनगराद् रघुरायमेनं
दृष्ट्वाऽऽगतं विमलमानसमत्र सोऽयम्।
भक्तव्रजैकशरणो रणछोड़दासः
स्नेहस्मितास्यकमलः समुवाच वाचम्॥२३॥

'हंहो किमत्र ननु रे गिरिजागिरीश-
पादद्वयाम्बुजरजःपरिपावितायाम्।
काश्यां तटेऽपि विमले मणिकर्णिकाख्ये
स्वद्रव्यनष्टकृतरोदनमाविधत्से!!॥२४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

'सार्धं मयैव समुपेह्यधिगङ्गमङ्ग
दूरीकरिष्यति महाविपदं तु सैव।'
एवं यदा ह्यनुययौ रणछोड़दासं
भागीरथीतटमहो विमलं प्रपेदे॥२५॥

एनं जगाद यतिराड् रणछोड़दासः
संस्थाप्य निर्जरधुनीपुलिनप्रदेशे।
गङ्गां नमस्कुरु मुदा मनसाऽतिभक्त्या
सा पूरयिष्यति मनोलषितं तवैव॥२६॥

एवं प्रभाष्य तमथ प्रथमो यतीनां
प्रावेशयत् सुरधुनीसलिलान्तराले।
तं स्वाञ्जलिं कनककोटिकमुद्रयाढ्यं
सद्यो विधाय च ततो बहिराजगाम॥२७॥

दृष्ट्वा तदद्भुतमहो पुरतस्तु सद्यः
भूयस्तरां तु भुवनातिशयं तदानीम्।
मेने तदा स नितरां भगवत्प्रसादा-
लभ्यं न किञ्चन जगत्त्रितये विभाति॥२८॥

देदीप्यमानकनकाञ्जलिपूर्णहस्तं
गङ्गोदरात्तु बहिरागतमेव सद्यः।
तीरस्थितः स तु पुना रणछोड़दासं
भूयो ननाम भगवत्करुणैकपात्रम्॥२९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

ऊचे स भक्तमुकुटीमणिरत्नमाला-
पोस्फुर्यमाणनखदीधितिपादपद्मः।
यावत् प्रयोजनमहो ननु तावदेव
गृह्णीष्व सम्प्रति, परं प्रतिदास्यसि त्वम्॥३०॥

एवं मुनेर्वचनश्च नतस्तदानीं-
मुद्रां तु काञ्चन च काञ्चनचर्चिताङ्गीम्।
सद्यस्तु विंशतिमयीमथ यो गृहीत्त्वा
काश्यां तु धर्ममखिलं विधिनाऽऽचचार॥३१॥

कालान्तरे पुनरहो रघुराय एष
वाराणसीं समुपसृत्य गुरोर्निदेशात्।
गङ्गाप्रसादकरुणापरिलब्धमुद्रां
प्रत्यर्पयद् वितथवागथ विंशतिं ताम्॥३२॥

तत्कृत्यमत्र निखिलं रघुराय एष
यो गीतवाद्यविधिना विधिना विधाय।
श्रीमद्गुरूक्तिकरुणास्पदमेव भूयः
यः पूर्वतोऽधिक इतः कृतकृत्य आसीत्॥३३॥

एवं विधाय सकलं गुरुवाक्यवश्यः
पुण्यास्पदं तदनु तत्स्मृतिरक्षणाय।
भक्त्या ददौ स गुरवे भवनद्वयं तत्
तद्धर्मशालमभवद् रघुरायनाम्ना॥३४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इत्थं विधाय बहुधा स बहुत्र हन्त,
लोकातिशायिमहिमाद्भुतदिव्यलीलाः।
भूयश्चमत्कृतिमहाकृतिसत्कृतीन्द्रो
रेजेऽत्र धर्मपरिरक्षणवृद्धिकामः॥३५॥

अथ विलोक्य तदा जगतीतले
मम तु कार्यमिदं परिपूरितम्।
प्रभुवरस्य विधानवशानुगः
सपदि तां चरमां गतिमाश्रये॥३६॥

इति विचिन्त्य तदा स्वमनीषया
निजमठोचितकार्यविधिव्रतम्।
सपदि शिष्यवरं समसेचयत्
सकलभक्तहृदम्बुजभास्करम्॥३७॥

समभिषिच्य तदा तु मठोत्तमेऽ-
थ मणिकर्णिकया परिभूषिते।
प्रयतमोहनदासममुं मुदा
स रणछोड़गुरुर्मुमुदेऽधुना॥३८॥

ननु पुरावदिह स्वमठोत्तम-
स्थितिमिमां विदधातुमना मुनिः।
स रणछोड़गुरूदितसत्प्रथा-
प्रथितमत्र चकार तमाश्रमम्॥३९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सकलसाधुसमागमनोत्सुको
वसनभोजनवासकृतश्रमः।
निखिलपण्डितसत्करणव्रतं
समकरोत्तु निजाश्रममादरात्॥४०॥

अथ च तत्र परम्परयाऽधुना
ननु स राजति हन्त मठोत्तमे।
य इह भाति मठाधिपतिर्मुदा
भुवि तदीयविधीन् परिरक्षति॥४१॥

रिङ्गत्तुङ्गतरङ्गरिङ्गणगणव्यासङ्गगङ्गाङ्गनाऽ-
पाङ्गोत्सङ्गशुभाङ्गमङ्गलगलत्सत्प्राङ्गणालिङ्गितम्।
श्रीश्रीमन्मणिकर्णिकाकणरजःपीयूषयूषश्रयं
भूयः सम्प्रतिभाति हन्त सतुआबाबाश्रमाख्यं महः॥४२॥

अद्यत्वे तु विभाति तत्र सतुआबाबाश्रमाख्ये मठे
यो योगासनसत्क्रियोदितविधिप्रावीण्यकर्मव्रतः।
भूयो देशविदेशचङ्क्रमणतस्सर्वत्र भूमण्डले
श्रीमद्भारतराष्ट्रकीर्तिममलां विख्यापयत्यादरात्॥४३॥

श्रीश्रीमन्मणिकर्णिकास्थसतुआबाबाश्रमस्यास्य यो
सर्वेषां यमिनां मणिः किल मठाधीशः प्रशस्यव्रतः।
सम्मान्यो निदुषां जगद्गुरुरसौ श्रीवैष्णवैकाग्रणीः
राराजीतु महीतलेऽत्र यमुनाचार्यस्सतां शेखरः॥४४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीमद्भारतभूमिभूमविभवालङ्कारभूषामणिः
किं वा वैष्णवसम्प्रदायविलसत्सिद्धान्तचिन्तामणिः।
शुद्धाद्वैतमहामताम्बुजगलत्पीयूषरक्षामणिः
भूयो भाति महीतले स यमुनाचार्याभिधोऽसौ मणिः॥४५॥

विष्णुस्वामिकृपाकटाक्षविगलत्पीयूषयूषोल्लसत्-
सत्सिद्धान्तपरम्परामणिमहामालासुमेरूपमः।
शुद्धाद्वैतमयश्रुतीरितमतप्राचुर्यचातुर्यधीः
सोऽयं सन्ततमाविभाति यमुनाचार्यो मठाधीश्वरः॥४६॥

श्रीमद्गोकुलचन्द्रमन्त्रमधुभृच्छम्मोः प्रभृत्यादराद्
येयं नादपरम्परा प्रचलिता वैराग्यसम्बर्धिनी।
तत्पीठाधिपतिर्जगद्गुरुरयं विश्वप्रसिद्धो यती
राराजीति सदा मुदे स यमुनाचार्यः सतां भूतये॥४७॥

विश्वस्मिंस्तु विदिक्षु दिक्षु सततं पाश्चात्त्यदेशेष्वपि
न्यूजर्स्यामिटलीषु जर्मनिपदे न्यूयार्कदेशे तथा।
फ्रान्से वेल्जियमे पुनः पुनरहो डेलावरे सुन्दरे
विश्वस्मिन्निह यत्र तत्र भवतो यात्रास्ति भक्तेच्छया॥४८॥

इत्थं श्रीरणछोड़दासजचमत्कारैकलीलास्पद-
श्रीश्रीमन्मणिकर्णिकाद्भुतमहाश्रेयोवितानात्मकः।
योगाभ्यासमहाप्रचारनिचयाऽसन्देहसन्दोहधी-
र्भात्येवात्र जगद्गुरुस्तु यमुनाचार्यः सतामग्रणीः॥४९॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

यश्छात्रोन्नतिकारको मतिमतां विद्यावताम्पोषको
यस्सच्छास्त्रविचारको निजगुरोः पादद्वयस्यार्चकः।
आम्नायोक्तिसमर्थकः सुकविताराजद्रसास्वादको
भूयो भाति जगद्गुरुस्तु यमुनाचार्यः सताम्पालकः॥५०॥

श्रीश्रीमत्कविराजराजिमुकुटालङ्कारभुक्ताप्रभा-
गोपीनाथकृपाकटाक्षविगलत्पीयूषविश्रान्तिभूः।
योऽयं श्रीमनुदेवशाब्दिककविस्तस्य प्रबन्धे महा-
काव्ये वैष्णववैभवेऽत्र नवमः सर्गो निसर्गोत्तमः॥५१॥

भारद्वाजमुनीन्द्रसंस्कृतविमानप्राञ्जलप्रक्रिया-
विष्कारप्रथितप्रयासपटुताप्रष्ठप्रतिष्ठाप्रभः।
यश्चक्रेऽत्र विशुद्धवैभवमहाकाव्यप्रबन्धादिकं
तस्य श्रीमनुदेवपण्डितकवेरेषा कृती राजताम्॥५२॥

रामारामस्य वैयाकरणमृगपतेरस्ति पौत्रः कनिष्ठो
वीणापाणौ तथा श्रीपशुपतिबुधतोऽवाप्तजन्मा द्विजो यः।
सम्पूर्णानन्दनामान्वितविबुधवचोविश्वविद्यालयीयः
श्रीविष्णुस्वामिलीलामयमथ च महाकाव्यमेतद् व्यतानीत्॥५३॥

वृत्तिच्छेदमहापिशाचविकटद्रंष्टाकरालानल-
प्रप्सातप्रतिभाप्रभस्य मनुदेवस्यास्य सैषा कृतिः।
श्रीमत्साधुचरित्रवर्णनमहासौरम्यसौलभ्यभाग्
वाग्देवीचरणारविन्दयुगले भृङ्गीभवत्वादरात्॥५४॥

॥इति श्रीमत्सकलसतीशिरोमणिमालारत्नवीणापाणिदेवीनिखिल-
तन्त्रापरतन्त्रपण्डितश्रीपशुपतिभट्टाचार्यकनिष्ठसुतमनुदेवभट्टाचार्य-
व्याकरणाचार्यविरचिते वैष्णववैभवे महाकाव्ये नवमः सर्गः॥

॥सम्पूर्णमिदं वैष्णववैभवं महाकाव्यम्॥

श्रीः श्रीः श्रीः श्रीः श्रीः रचनाकालः-आषाढी कार्ष्णी द्वादशी
प्रदोषपूजावेला सूर्यवारः॥२०५१॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आश्रम की शाखाएँ

१. काशी विश्वनाथ सतुआ बाबा ट्रस्ट, रेलवे फाटक के पास, भावनगर रोड, पाणिताणा, गुजरात।
फोन : ०२८४८-५२१२८

२. श्रीसतुआबाबा योग साधना केन्द्र, पड़ाव, डोमरी, वाराणसी।
फोन : ०५४२-३३९२५३।

३. कर्दमेश्वर, कंदवा, वाराणसी।

४. सागरसेमर, श्रीसतुआबाबा गौशाला, डगगगपुर, चुनार, मिर्जापुर।

५. गोमती दक्षिण तट, पो.-बेनीगंज, जिला-हरदोई।

६. नैमिषारणय चक्रतीर्थ के निकट, जिला-सीतापुर।

७. मुकाम वर्तेज, कालीअम्बा, जिला-भावनगर, गुजरात।

८. कल्याण पुरा, महेशाणा, गुजरात।

आम्नाय
भरतनिधि, क

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi